अतिशयक्षेत्र शिवपुरी के मूलनायक

छत्री वाले पार्श्वनाथ

लघु जिनवाणी

(अभिषेक-शांतिधारा नित्य-पूजन विधि)

पावन प्रेरणा

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	छत्री वाले पार्श्वनाथ (लघु जिनवाणी)
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
पावन प्रेरणा	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रस्तोता	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
प्रसंग	:	गुरुपूर्णिमा, 22वाँ चातुर्मास 2020 छत्री मंदिर शिवपुरी (म.प्र.)
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
लागत मूल्य	:	45/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क–94251-28817
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. सिंघई श्रीमान पूरनचंदजी जैन एवं

स्व. श्रीमती गब्बोबाईजी जैन की पुण्यस्मृति में

श्री विजयकुमारजैन(रिटायर बैंक मैनेजर)–श्रीमती मणिकांता

श्री राजेश जैन(अध्यक्ष दयोदय गौशाला सेंसई)–श्रीमती दीपशिखा

नमन, कु. अनन्या जैन

समस्त वोटा वाले परिवार शिवपुरी (म.प्र.)

मोबा. 9425137669, 9425129960

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा था वहीं अतिशय क्षेत्र छत्री मंदिर शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने प्रस्तुत कृति **'छत्री वाले पार्श्वनाथ'** नामक लघु जिनवाणी की रचना करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा रचित पूजायें एवं भक्तियाँ व भावनायें सम्मिलित हैं।

यह कृति उन श्रावकों के लिए है जो पूजा तो करना चाहते हैं परन्तु पूजन के क्रम आदि की जानकारी के अभाव में वे संकोच करके रह जाते हैं या समयाभाव के कारण नहीं कर पाते हैं। यह कृति श्रावक के षडावश्यक कर्तव्य में प्रथम कर्तव्य को पूर्ण करने में सहयोगी बनेगी। पाठशाला में बच्चों को पूजन संस्कार देने में भी यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी। निर्मल देदखुर (शिखर), राजेश बोटा, माणिक, अर्चित, रूपेश, सौरभ, पीयूष, अभिषेक आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

क्षेत्र परिचय

भारत का हृदय प्रदेश कहलाने वाले मध्य प्रदेश राज्य के ग्वालियर संभाग में विंध्याचल की सुरम्य पहाड़ियों के बीच बसा हुआ शिवपुरी एक सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल है यहाँ पर सिंधिया राजवंश की ऐतिहासिक छत्रियाँ, वाणेगंगा, भदैया कुंड, सांख्य सागर झील, भूरा-खो तथा भारत का प्रसिद्ध माधव नेशनल पार्क है, यहाँ की मनोमुग्धकारी वैभव को देखकर पर्यटकों का मन प्रसन्न हो जाता है।

शिवपुरी के इसी सुरम्य एवं आकर्षक सौंदर्य के बीच एक अमूल्य धरोहर के रूप में स्थित है श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र छत्री मंदिर। यह मंदिर शहर के बीचों-बीच गुरुद्वारा चौराहे पर आगरा मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 3 पर स्थित है। इस मंदिर में विक्रम संवत् 1407 में निर्मित 650 वर्ष प्राचीन श्री आदिनाथ भगवान एवं एक निर्ग्रंथ मुनिराज के चरण स्थित हैं इसलिए इसे श्री आदिनाथ चरण छत्री भी कहते हैं।

यहाँ पर वर्ष 1990 में माह जनवरी में परम पूज्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोक तीर्थ बड़ागांव दिल्ली के प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के चरण पड़े। उन्होंने इस स्थान के महत्व को समझा। उसी समय समाज ने उन्हें शिवपुरी से 50 किलोमीटर दूर ग्राम खलारा में स्थित श्री पार्श्वनाथ भगवान की ऐतिहासिक प्राचीन प्रतिमा के बारे में जानकारी दी। पूज्य आचार्य श्री की प्रेरणा से ही शिवपुरी समाज ने वर्तमान मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा को खलारा ग्राम से लाकर प्रतिष्ठा कराई। चूँकि खलारा ग्राम में इस प्रतिमा के निकलते ही इस प्रतिमा पर चोरों की नजर थी इस प्रतिमा को चोर चुराकर बेचना चाहते थे लेकिन जब चुराने के लिए खड़ी प्रतिमा को उठाने का प्रयास किया तो प्रतिमा उठी नहीं किंतु उल्टी लेट गई और चोर असफल होकर भाग गये। ग्रामीण लोग उस उल्टी प्रतिमा की पीठ पर श्रीफल नारियल फोड़कर अपनी मनोकामना की पूर्ति करने लगे। ग्राम वासियों को जो भी समस्याएँ होती थीं इस प्रतिमा पर श्रीफल फोड़ने से उनकी समस्याएँ हल होने लगीं इसलिए गाँव के लोग इस प्रतिमा को ग्राम देवता मानकर पूजने लगे और जब इस प्रतिमा को लेने की बात आई

तो ग्रामवासियों ने देने से इंकार कर दिया। काफी मुश्किलों का सामना करते हुए इस प्रतिमा को यहाँ तक लाने में सफलता प्राप्त हुई इसलिए इस प्रतिमा के बारे में यह उक्ति चरितार्थ होने लगी कि यह प्रतिमा बड़ी मुश्किल से तो प्राप्त हुई है पर सबकी मुश्किलों को दूर करती है। अतः अतिशयकारी प्रतिमा व अतिशयकारी क्षेत्र के रूप में यह मंदिर प्रसिद्ध होने लगा। मार्च 1990 में आचार्य श्री ने ऐतिहासिक लघु पंचकल्याणक कराके इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

भव्य मंदिर, संत निवास एवं धर्मशाला निर्माण

वर्ष 1990 से ही इस स्थान की चमत्कारी प्रगति हुई है। वर्तमान में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान के साथ ही क्षेत्र पनिहार (ग्वालियर) से लाए गए 600 वर्ष प्राचीन श्री वासुपूज्य भगवान एवं श्री धर्मनाथ भगवान तीन वेदियों पर विराजमान है। यह मंदिर प्राचीन प्रतिमाओं का अनुपम केंद्र है। यहाँ पर भव्य संत निवास, विशाल धर्मशाला, श्री शांतिनाथ वाचनालय एवं विराग-विमर्श प्रवचन प्रांगण का निर्माण कार्य सम्पन्न हो चुका है।

ऐतिहासिक प्रतिमा के ऐतिहासिक पंचकल्याणक

इसी मंदिर में वर्ष 2001 में 5 दिसम्बर को अशोकनगर जिले की ईसागढ़ तहसील के ग्राम इदौर (कदवाया) से 1000 वर्ष से अधिक प्राचीन श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ भगवान की 11 फुट की ऐतिहासिक प्रतिमाएँ लाईं गयीं थीं। इस प्रतिमा के अद्‌भुत परिकर में 24 से अधिक जिनबिम्ब दर्शनीय हैं। जीर्णोद्धार के बाद इस प्रतिमा एवं नवनिर्मित मानस्तंभ की प्राणप्रतिष्ठा का कार्यक्रम 18 जनवरी से 24 जनवरी 2008 तक परमपूज्य उपसर्ग विजेता गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के परम प्रिय कवि हृदय श्रमण आचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

===

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
1. मंगल भावना	07
2. मंगलाष्टक	08
3. अभिषेकपाठ (संस्कृत)	10
4. अभिषेक पाठ (हिन्दी)	15
5. अभिषेक स्तुति	18
6. अभिषेक गीत	19
7. लघु शांतिधारा	20
7. वृहद् शांतिधारा	21
8. अभिषेक आरती	24
9. विनय पाठ	25
10. पूजन पीठिका	27
11. लघु पूजन पीठिका	31
12. समुच्चय पूजन	34
13. नवदेवता पूजन	37
14.अर्घ्यावली-महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन(नवीन)	40
15. छत्री वाले पार्श्वनाथ पूजन-विधान-दीप अर्चना, महिमा-आरती	47, 61
16. छत्री वाले पार्श्वनाथ चालीसा-भजन	62, 64, 65, 103
17. आरती-छत्री वाले पार्श्वनाथ भगवान की	66
18. छत्री वाले शांतिनाथ पूजन	67
19. श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पूजन	72
20. श्री चौबीसी पूजन	76
21. श्री चन्द्रप्रभ पूजन	80
22. श्री वासुपूज्य पूजन	84
23. श्री धर्मनाथ पूजन	90
24. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन	95
25. श्री महावीर पूजन	99
26. दीपावली पूजन विधि गणधर पूजन-आदि	104
27. आचार्य श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन-आरती	114
28. मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन-आरती	120
29. अर्घ्यावली-महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन (प्राचीन)	124
30. आलोचना पाठ	130
31. सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)	131
32. दर्शन पाठ (दोहा)	132
33. दर्शन पाठ (चौपाई)	133
34. समाधि भावना	134
35. निर्वाणकाण्ड (नवीन)	135
36. निर्वाणकाण्ड (प्राचीन)	137
37. भक्तामर-स्तोत्र संस्कृत	139
38. भक्तामर भाषा	146
39. पार्श्वनाथ चालीसा (प्राचीन)	150
40. श्री पार्श्वनाथस्तोत्र	152
41. महावीराष्टक स्तोत्र	153
42. महावीराष्टक-पद्यानुवाद-भावानुवाद	154, 155
43. गोम्मटेश अष्टक भावानुवाद (चौपाई)	156
44. पंचपरमेष्ठी आरती-भजन	157
45. नवदेवता पूजन (अंग्रेजी)	158

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्- -नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥
नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥
ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।

इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥
सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता -सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

अमृत स्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

पात्र शुद्धि

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमोषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। (नवतिलक करें)

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक/आपराह्णिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।

सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्धि-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चन्दन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशांति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं हं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि। ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषभादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चन्दन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ायें)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।

जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक पाठ

(पं. जसहर राय कृत) (दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमूँ जोरि जुगपान॥

(अडिल्ल)

श्री जिन जग में ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन-धनी॥

(हरिगीतिका)

अनुपम अमित तुम गुणनिवारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हर उर कोष में सो अकथ-गुण-मणि-राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं, नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥

तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरन-युत वंदत भयौ।
तुम पुण्य को प्रेरयो हरी ह्वै, मुदित धनपति सौं कह्यौ॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति, सफल सुरपद को करौ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ।
दे प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित है, सवसरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गती को, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामण्डप, कनक मणिमय छाजहीं।

नग–जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं ॥3॥
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
ता पर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमर जी।
महा भक्तिजुत ढोरत हैं तहाँ अमर जी॥
प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यह वीतराग दशा प्रतच्छ, विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि, जीव मस्तक नायकैं।
बहुँ भाँति बारम्बार पूजें, नमैं गुण गण गायकैं ॥4॥
परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥
श्रम बिना श्रमजल रहित पावन, अमल ज्योति–स्वरूप जी।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूप जी॥
ऐसे प्रभु की शान्तमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति हैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं॥5॥
तुम तौ सहज पवित्र यही निचय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसुविधि वश दुख सह्यो॥
बीत्यो अनंतों काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता हर एक तुम ही, भरहुँ वांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, रोष–रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं उद्धार शिव वासा करौ॥6॥
मैं जानत तुम अष्टकर्म हनि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग–वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही।

नय-प्रमाण तैं जानि महा साता लही॥
पापाचरण तजि न्हवन करता, चित्त में ऐसे धरूँ।
साक्षात श्री अरहंत का मानों, न्हवन परसन करूँ॥
ऐसे विमल परिणाम होते, अशुभ नसि शुभबंधतैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै, शर्म सब विधि नासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन भये तुम दरसतैं।
पावन पाणि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं।
पावन रसना मानी तुम गुणगान तैं॥
पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन, नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन-प्रचण्ड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरौ।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करौ॥
आनन्द-कारण दुख-निवारण, परम मंगलमय सही।
मोसों पतित नहिं और तुमसों, पतित-तार सुन्यौ नहीं॥
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े ते, भये भवदधि पार ही॥9॥

(दोहा)

तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्त को, हमें उतारौ पार॥10॥

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–2, सब– रोज कराओ रे॥ प्रासुक...

1. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–2, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...

2. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–2, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...

3. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–2, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...

4. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–2, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...

5. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–2, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...

6. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–2, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....

जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आये शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....

श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....

जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....

हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तू भी अपना फर्ज निभाले, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

लघु-शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, द्वादश-गणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान-पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महीव्याप्ताय, अनंत-संसारचक्र-परिमर्दनाय, अनंत-दर्शनाय, अनंत-ज्ञानाय, अनंत-सुखाय, अनंत-वीर्याय, त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, धरणेन्द्र-फणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका-चतुस्संघोपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-विनाशनाय, अघातिकर्म-विनाशनाय। **अपवादं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **मृत्युं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व अग्निभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व-शत्रुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमृगभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मचक्रभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमन्त्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्षयरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वकुष्ठरोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूररोगं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वनरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाश्वमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगोमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमहिषमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वधान्यमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववृक्षमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगुल्ममारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपत्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपुष्पमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वफलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदेशमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविषमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेताल-शाकिनीभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि,

भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वकर्माष्टकं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ सुदर्शन-महाराज मम चक्र-विक्रम-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शांतिं कुरु-कुरु। सर्व-जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-भव्यानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-ग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-देशानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व-यजमानानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वदुःखं हन हन, दह दह, पच पच कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

शिवमस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान-पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः। इत्येन मन्त्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक-धारा-वर्षणम्।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

वृहत्-शांतिधारा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्वां ह्रीं ह्वूं ह्वें ह्वैं ह्वों ह्वौं ह्वं ह्वः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनंतचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनंत-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनंत-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, उपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमन्त्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मन्त्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि,

भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली -नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्म-श्री-बलायुरारोग्यैश्वर्याभि-वृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपममुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

1. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

2. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

3. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

4. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुये मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

5. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

6. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

7. अभिषेक आरती पूजायें, सौभाग्य पुण्य से मिल पायें।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पायें मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

===

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥6॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥8॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥15॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार ॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥22॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ॥23॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव ॥24॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ॥26॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥27॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ 1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ 2॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥ 3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥ 4॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म-, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ 5॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ 6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ 7॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ 1॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ 2॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्-गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ 3॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ 4॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्रमह-मेकमना जुहोमि॥ 5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(इति जिनेन्द्र-स्वस्तिमंगलविधानं-परि-पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 1॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्नसंश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 2॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 3॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 4॥
जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 5॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 6॥
सकाम-रूपित्व वशित्व-मैश्यं, प्राकाम्य-मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 8॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्-तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 9॥
क्षीरं-स्रवंतोऽत्र घृतं-स्रवंतो, मधु-स्रवंतोऽप्य-मृतं-स्रवंतः।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 10॥

(इति परमर्षि-स्वस्तिमंगलविधानं-परि-पुष्पांजलिं...)

===

[समय कम होने पर या संस्कृत पढ़ने में कठिनाई होने पर यह लघु पूजन पीठिका भी पढ़ सकते हैं अथवा पूजन प्रारंभ करें]

लघु पूजन पीठिका

विनय–पाठ (दोहा)

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु द्वार।
जिन–सूरज जिन–चन्द्र को, नमोऽस्तु बारम्बार॥ 1॥
कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकीनाथ॥ 2॥
आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान्॥ 3॥
भक्तों को तुम तारते, तारण–तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज॥ 4॥
नाथ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर भी करुणा करो, कर दो अब उद्धार॥ 5॥
जन्मादिक व्याधीं हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बंध से मुक्ति दो, देकर कुछ संन्यास॥ 6॥
तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार॥ 7॥
जल बिन ज्यों मछली हुयी, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात॥ 8॥
नमूँ–नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्रगुरु को नमूँ, हो मंगल आशीष॥ 9॥
परमेष्ठी पाँचों नमूँ, नमूँ–नमूँ नवदेव।
भूत भविष्यत आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव॥ 10॥
मंगल–मंगल बोल हों, मंगल–मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥ 11॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (९ बार णमोकार)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं...)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं...)

(ज्ञानोदय)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥
श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पांजलिं..)

पाँचों कल्याणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्त्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो अर्घं...।

पूजा प्रतिज्ञापाठ (ज्ञानोदय)

तीनलोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान-सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होमकर, भाव शुद्ध करने आया॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगलपाठ

(ज्ञानोदय)

स्वस्ति हों श्री वृषभनाथ जी, अजितनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री शम्भवनाथ जी, अभिनंदन जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री सुमतिनाथ जी, पद्मप्रभ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री सुपार्श्वनाथ जी, चंद्रप्रभ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री पुष्पदंत जी, शीतलनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री श्रेयांसनाथ जी, वासुपूज्य जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री विमलनाथ जी, अनंतनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री धर्मनाथ जी, शांतिनाथ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री कुंथुनाथ जी, अरनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री मल्लिनाथ जी, मुनिसुव्रत जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री नमिनाथ जी, नेमिनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री पार्श्वनाथ जी, महावीर जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों चौबीसों स्वामी, देव-शास्त्र-गुरु स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों पाँचों परमेष्ठी, नवों देवता स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री जिनशासन जी, धर्म अहिंसा स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों 'सुव्रतसागर' के, 'विद्यागुरुवर' स्वस्ति हों॥

(पुष्पांजलिं..)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ (दोहा)

चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं परिपुष्पांजलिं...)

===

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

है संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी वहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥
निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचायेंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जायेंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जायें अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शांति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किये पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जायेंगे तो, मोक्षदातृ अरिहंत मिलें॥
कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहंता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पायी, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।
सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानंत॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अर्हंत् स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी ॥1 ॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शांति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें ॥2 ॥
कहें देव अर्हंत जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रंथ आचार्य वाँचें।
अनेकांत रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानंद प्राणी ॥3 ॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी ॥4 ॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है ॥5 ॥

(अर्ध ज्ञानोदय)

देव शास्त्र गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनंतानंत भजें।
सुव्रत बनके संत दिगंबर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु प्रभु करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥5॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥7॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दु:खों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पायें तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी का अर्घ्य (मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी का अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पायें निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आये।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥

प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर - अष्टापद - गिरनार - चम्पापुर - पावापुर - कुंडलपुर - पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी-सेसई-छत्रीमंदिर शिवपुरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे - मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शांतिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शांतये शांतिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शांतये शांतिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

छत्री वाले अतिशयकारी श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (शंभू)

हे! नाथ बनारस के पारस, शिवपुरी वसे छत्री वाले।
हे! चिंतामणि अतिशयकारी, दुख-दर्द रोग हरने वाले॥
अब करें आपकी पद पूजन, ये आमंत्रण स्वीकारो तो।
हम जीवन धन्य बना लेंगे, बस हमको जरा निहारो तो॥

(दोहा)

हृदय कमल पर आइये, छत्री वाले नाथ।
भक्त विनय सुन जाइये, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।
(पुष्पांजलिं...)

(लय—माता तू दया करके)

छत्री वाले पारस, भक्तों पर कृपा करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
इस स्वार्थ भरे जग में, अपना माने किसको।
किससे संबंध रखें, जो सुखी करे हमको॥
दे चरण शरण अपनी, हमको भी स्वस्थ करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो।
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जग घाव हमें देकर, सच! बहुत रुलाता है।
फिर नमक मिर्च भरकर, भव-भव तड़पाता है॥
यह ताप तपन हरने, हम पर भी छाँव करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

छत्री वाले पारस, भक्तों पर कृपा करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
काया की माया ने, आकर्षक जाल बुने।
सब उलझ रहे इनमें, अब किस की कौन सुने॥
अब सुनो नाथ हमको, तुम अपने साथ रखो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ये काम व्यथाऐं तो, सब को ही लूट रहीं।
थी किस्मत हीरे सीं, पर सबकी फूट रहीं॥
बस दया करो इतनी, हम सब की लाज रखो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

उपसर्ग जिन्हें किंचित्, विचलित ना कर सकते।
वह रहा कौन सा रस, जिसको पारस चखते॥
पारस रस चखने को, हमको भी योग करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

पलकों पर पारस हों, नजरों में पारस हों।
जब खोलें जब मूंदे, नयनों में पारस हों।
यह विनती पूरी हो, हम पर भी नजर करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, फिर उस सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

ना कोई लड़ाई लड़ी, ना कुछ विपरीत किया।
बस कर्म युद्ध जीता, सब का दिल जीत लिया॥
हम कर्म विजित कर लें, ऐसा विश्वास भरो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तुम कठिन साधना कर, अपना पथ मोड़ लिये।
हो सिद्ध प्रसिद्ध तुम्हीं, सबका मन मोह लिये॥
अब हमको तुम छूकर, पारसमणि स्वर्ण करो।
हम करें नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हो कहाँ आजकल तुम, वह पता बता देना।
फिर आप नहीं आना, हमको ही बुला लेना॥
पथ तुमसे मिलने का, तुम ही आसान करो।
हम करे नमोऽस्तु तो, प्रभु सिर पर हाथ रखो॥
छत्री वाले पारस...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

स्वर्ग त्यागकर चौदहवाँ जब, दूज कृष्ण वैशाख रही।
वामा (ब्राह्मी) जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस शुभ तिथि में, नगर बनारस जन्म लिया।
अश्वसेन(विश्वसेन) राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।

पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस को सारा, त्याग परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र कृष्ण चतुर्थी प्रातः में, घाति कर्म सब नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

श्रावण शुक्ल सप्तमी प्रातः, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, हम पायें सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बंधन सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं छत्री वाले बाबा श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

शिवपुरी अतिशय क्षेत्र के, अतिशय कारी ईश
छत्री वाले पार्श्व प्रभु, दो हमको आशीष

(ज्ञानोदय)

संकट में जो फँसे हुए हैं, अपना सब कुछ गँवा चुके।
रोग शोक दुख दर्दों गम में, टूट चुके सब लुटा चुके॥
मिला न कोई जिन्हें सहारा, तो प्यारे मत घबराना।
छत्री वाले पारस प्रभु को, करके नमोऽस्तु बस ध्याना॥1॥
संकट कट जाएंगे सारे, मिल जाएगी निधियाँ रे।
घर परिवार फलें फूलेंगे, फिर लौटेंगी खुशियाँ रे॥
बाल न बांका होगा उनका, नींद चैन की आएगी।
छत्री वाले पारस प्रभु की, कृपा दृष्टि हो जाएगी॥2॥

जी हाँ यह वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेइसवे जिननाथ रहे।
शिवपुरी के छत्री वाले प्रभु, पद्मासन के नाथ रहे॥3॥
देवों से रक्षित प्रतिमा ये, पायी ग्राम खलारा से।
अतिशय कारी परिकर धारी, जोड़े सुख की धारा से॥
चुरा सके ना चोर किंतु, ये प्रतिमा उल्टी हो बैठी।
ग्रामदेवता मान इसे सब, जनता चरणों में लेटी॥4॥
फोड़ नारियल जिस पर अपनी, मनोकामना पूर्ण करें।
अतः ग्रामवासी ये प्रतिमा, देने से इंकार करें॥
प्राप्त हुई थी मुश्किल से पर, सबकी मुश्किल दूर करे।
एक बार जो दर्शन कर ले, मोहित उसे जरूर करे॥5॥
भक्तों के सब काम बनाते, छत्री वाले पारस जी।
हरें महामारी बीमारी, चखवाते आतम रस भी॥
दुखियों का दुख दूर भगाते, निर्धन को धनवान करें।
भय उपसर्ग मिटाते उनके, जो पारस का ध्यान धरें॥6॥
परम पूज्य आचार्य शिरोमणि, सन्मति सागर गुरुवर ने।
सन् नब्बे में कर निर्देशन, दर्श दिया पारस प्रभु ने॥
जिन मंदिर विख्यात यहाँ का, दुनियाँ में है उपकारी।
शांति-कुंथ-अरनाथ प्रभु जी, फिर आए अतिशयकारी॥7॥
पारस अतिशय क्षेत्र शिवपुरी, हम सबका कल्याण करें।
चरणों में बस यही प्रार्थना, अंत समाधि मरण करें॥
दुख उपसर्ग सहन करने को, पारस जैसा धीर मिले।
'सुव्रत' विद्या की नैया से, भवसागर का तीर मिले॥8॥

(दोहा)

छत्री वाले पार्श्व प्रभु, हम भक्तों के प्राण।
नमोऽस्तु कर पद पूजते, सब का हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शांतये शांतिधारा)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

===

छत्री वाले बाबा विधान मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ॥-4
(जोगीरासा)
बड़े बुजुर्गों से सुनते हैं, साक्ष्य मिले हैं ऐसे।
तीर्थों के हैं तीर्थ हमारे, तीर्थंकर के जैसे॥
भारत देश महान तीर्थ है, कण-कण इसके पावन।
सो भूगर्भ धाम से प्रकटें, चैत्य बिम्ब जिन भगवन॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः ॥-4
तीर्थ क्षेत्र शिवपुरी नगरिया, ऐतिहासिक न्यारी।
पहले पारस यहाँ पधारे, मंगल अतिशयकारी॥
शांतिकुंथु अरनाथ बाद में, शांति प्रदाता आये।
विश्व महामारी के हर्त्ता, आदिनाथ फिर पाये॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः ॥-4
एक तरफ अध्यात्म विषय है, एक तरफ संसारी।
जिनमें सामंजस्य बिठाते, धर्म तीर्थ हितकारी॥
सो सांसारिक विषय भोग के, साथ धर्म ना छोड़ें।
जियो और जीने दो सुव्रत, सम्यक् पथ पर दौड़ें॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः ॥-4
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल, क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
छत्री वाले प्रभु को नमोऽस्तु, करके मंगल होवे।
पार्श्वनाथ स्वामी को नमोऽस्तु, करके मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः ॥-4

===

[यदि पार्श्वनाथ विधान करना हो तो पूजन करने के बाद यहाँ मंगलाचरण करके ये 48 अर्घ्य चढ़ाकर विधान कर सकते हैं या 48 ऋद्धि मंत्रों के साथ 48 दीप प्रज्ज्वलन करके भी आराधना कर सकते हैं।]

छत्री वाले बाबा विधान अर्घ्यावली (48 गणधर वलय)

(हाकलिका)

इंद्री कर्म विजेता हैं, भक्तों के सुख नेता हैं।
जय पारस जिनवर जिन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 1 ॥

संयम वाला अवधिज्ञान, दुख हर्त्ता है तीर्थ स्थान।
श्री चैतन्य चिदातम हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥2 ॥

जिन परमावधि अवधिज्ञान, निर्धन हरे करे धनवान।
परमेष्ठी हैं पावन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥3 ॥

श्री सर्वावधि अवधिज्ञान, संकट मोचक दे वरदान।
ऋद्धि सिद्धि के साधन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥4 ॥

अनंतावधि शुभ अवधिज्ञान, हर्ता रोग शोक अभिमान।
शांति प्रदायक आगम हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥5 ॥

बुद्धिमदंता दूर करें, कोष्ठबुद्धि भरपूर करें।
भेद-ज्ञान के चेतन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥6 ॥

धर्म वृक्ष के बीज रहे, भक्त भक्ति कर सीझ रहे।
बीजबुद्धि के सिंचन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥7 ॥

सुनें एक पद सब समझें, पद-पद में जग से सुलझें।
पदानुसारी प्रवचन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥8 ॥

एक साथ सबकी सुनकर, अलग-अलग कह दें उत्तर।
संभिन्नश्रोतृ श्रुत धन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥9॥

खुद से खुद उपदेशित हो, भव तन भोग त्यागते जो।
स्वयंबुद्ध परमातम हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥10॥

गुरु उपदेश बिना ज्ञानी, बनते तप बल से ध्यानी।
वह प्रत्येकबुद्ध गण हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥11॥

पर से पाकर शिक्षा को, जीते सभी परीक्षा को।
बोधितबुद्ध निरंजन हैं, छत्री वाले भगवन हैं॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥12॥

(चौपाई)

सीधा-सादा जाने मन की, रोग व्यथा हरता जन-जन की।
परम पूज्य ऋजुमति मनपर्यय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥13॥

वक्र विषय मन का समझेगा, व्यथा मानसिक दूर करेगा।
ज्ञान विपुलमति है मनपर्यय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥14॥

दसों दिशा को उज्ज्वल करता, दुख अज्ञान पाप मल हर्त्ता।
दसपूर्वित्व ज्ञान के आलय, छत्री वाले बाबा की जय ॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥15॥

चौदहगुण स्थान चढ़ायें, भक्तों को भगवान बनायें।
है चौदहपूर्वित्व जिनालय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥16॥

जो अष्टांग शुभाशुभ फल को, कहते करते सुखमय कल को।
कुशल मंत्र अष्टांग शिवालय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 17॥

अणिमा आदिक आठ विक्रियाँ, संयम धर को हुई सिद्धियाँ।
पूज्य विक्रियाऋद्धि आलय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वणपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥18 ॥

विद्याधर नर संयमधारी, मंगल करें अमंगल हारी।
विद्याधर सुख के विद्यालय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥19 ॥

तप बल से मुनि चलें जहाँ पर, जीव घात ना हुए वहाँ पर।
चारणऋद्धि ज्ञान हिमालय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 20 ॥

बिना पठन.पाठन हों ज्ञानी, धार्मिक कृपा बड़ी वरदानी।
प्रज्ञाश्रमण करें भाग्योदय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥21 ॥

तप बल से नभ में चल सकते, जीव दयाकर निज में रमते।
हैं आकाशगमन ज्ञानोदय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥22 ॥

मर जा कहने पर मर जाते, पर यह बल उपयोग न लाते।
हैं आशीर्विष ऋद्धि दयोदय , छत्री वाले बाबा की जय ॥॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥23 ॥

रोष नजर से जिसको देखें, वो मर जाये अतः न देखें।
ऋद्धि दृष्टिविष है जैनोदय, छत्री वाले बाबा की जय॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥24 ॥

(विष्णु)

दीक्षा लेकर मरण काल तक, तप कर कष्ट हरें।
एक-एक उपवास अधिक कर, सुख से जगत भरें॥
ऋद्धि उग्रतप हरे उग्रता, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 25 ॥

बेला आदिक करने पर भी, तन बल तेज बढ़े।
क्षुधा रोग जीतें तप करके, हमने चरण पड़े॥
ऋद्धि दीप्ततप देती ऊर्जा, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥26 ॥

कर आहार निहार न होता, तप बल के द्वारा।
किंतु शक्तियाँ बढ़ती जातीं, चमत्कार न्यारा॥
ऋद्धि तप्ततप निज रस दात्री, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥27॥

महा-महा उपवास आदि कर, करें तपस्याएँ।
भक्तों को संबल साहस दें, हरें समस्याएँ॥
ऋद्धि महातप महा बनाएँ, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥28॥

अंतरंग बहिरंग तपों से, कर्म नशा डालें।
भले रोग आ जाएँ लेकिन, धर्म नियम पालें॥
घोरतपा करसी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि॥ 29॥

शांत चित्त तप करके जग के, दुख दुर्भिक्ष हरें।
रोग शोक वध कलह दूर कर, सब को स्वस्थ करें॥
ऋद्धि घोरगुण करें दान गुण, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि॥ 30॥

त्रय जग संहारक बल पाकर, नहीं प्रयोग करें।
धर्म अहिंसा परमो धर्मः, धरकर योग धरें॥
घोरपराक्रम तप सुखदाता, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥31॥

महा अघोरब्रह्म तप करने, बने ब्रह्मचारी।
ईति आदि भय शांत करे तप, है अतिशयकारी॥
शुभ अघोरगुण-ब्रह्मचर्य को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 32 ॥

जिनका तन छूकर के प्राणी, शीघ्र निरोगी हों।
स्वस्थ मस्त होकर सुख भोगें, आतम योगी हों॥
आमर्षौषधि ऋद्धि मंत्र को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥33 ॥

जिनके लार थूक कफ आदि, हरें रोग तन के।
ऐसे ऋषियों की करुणा ही, सुख दे चेतन के॥
खेल्ल-औषधि खेल खेल में, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥34 ॥

बूंद पसीना जिनकी छूकर, दूर व्याधियाँ हों।
जीवन सार्थक लगने लगता, शुभ समाधियां हों॥
जल्लौषधि है मंत्र औषधि, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥35 ॥

जिनके मल मूत्रों को छूकर, नशते रोग सभी।
तन मन चेतन भव रोगों में, फसते नहीं कभी॥
विप्रुष-औषधि करती निर्मल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥36 ॥

जिनका तन छूकर के वायु, जहाँ-जहाँ जायें।
वहाँ-वहाँ की रोग व्याधियाँ, सहसा नश जायें॥
सर्वौषधि से सभी सुखी हों, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥37 ॥

जिस मन से मुहूर्त में श्रुत का, पूर्ण करें चिंतन।
किंतु थकें ना वही मनोबल, है धार्मिक सिंचन॥
मिले मनोबल महाबली को, हम पूजें आहा।

ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो मनबलीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 38 ॥

द्वादशांग श्रुत का उच्चारण, करते जग हित में।
कंठ तालु भी थके न सूखे, एक मुहूरत में॥
मिले वचनबल वचनबली को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 39 ॥

लोक कनिष्ठा पर रखने का, जिसमें संबल है।
कायोत्सर्ग करें विध-विध के, वही कायबल है॥
मिले कायबल कायबली को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥40 ॥

रूखा भोजन भी हाथों में, बने दुग्ध जैसा।
देख तपोबल के प्रभाव को, अचरज हो ऐसा॥
सबको क्षमा क्षीरस्रावी दें, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 41 ॥

वश कर रसना षटरस त्यागें, लें नीरस आहार।
फिर भी हाथों में घृत जैसा, बने शक्ति दातार॥
प्रेम दया दे सर्पिस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥42 ॥

रूखा सूखा भोजन भी तो, हाथों में आकर।
मधुर मिष्ठ मधु जैसा होता, तप प्रभाव पाकर॥
मधुस्रावी से सरस धर्म हो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुसवीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्वलनं करोमि ॥ 43 ॥

जिस प्रभाव से विष भी अमृत, जैसा हो जाता।
शत्रु वर्ग का कपट जाल भी, सफल न हो पाता॥

ज्ञानामृत सी अमृतस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥44॥

ऋषि के शेष भोज्य से चक्री, सेना पेट भरे।
पड़े न कम वा चार हाथ में, सुख से वास करे॥
यह अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 45 ॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, क्षेत्र सिद्ध निर्माण।
कृत्रिमाकृत्रिम सिद्ध आयतन, स्वस्थ रखें तन प्राण॥
तन मन चेतन स्वस्थ बनाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥46॥

हीयमान अवगुण जो करके, वर्धमान होते।
उनके चरण जहाँ भी पड़ते, खुद अतिशय होते॥
अतिशयकारी वर्धमान गुण, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 47 ॥

महावीर शासन में गौतम- गणधर से लेकर।
विद्यागुरु तक आचार्यों की, परम्परा भजकर॥
ऋद्धि-सिद्धि प्रभु करुणा पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं छत्री वाले पारस, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धरिसिणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि ॥ 48 ॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप पारस, गणधरों के नाथ हैं।
दुख दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' संभालें धर्म अपने, कर्म दल मल धो सकें॥

(दोहा)

छत्री वाले पार्श्व जी, रखते सबका ध्यान।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्री छत्री वाले बाबा श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं छत्री वाले बाबा श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला (दोहा)

छत्री वाले देवता, पार्श्वनाथ जिनराज।
संकट मोचक हम भजें, करके नमोऽस्तु आज॥

(जोगीरासा)

तीर्थों का यह तीर्थ निराला, भारत देश हमारा।
पड़े जहाँ पर दृष्टि वहाँ पर, दिखे प्रभु का द्वारा॥
प्रेम दया वात्सल्य धर्म का, घर बाहर व्यवहारा।
सत्य अहिंसा की आस्था ने, घट-घट को शृंगारा॥1॥
देख धर्म का अद्भुत संगम, भक्ति उमड़ती जाये।
अपने आप दिखें फिर अतिशय, धर्म ध्वजा लहराये॥
ऐसे छत्री वाले बाबा, सबके शरण सहारे।
दुख उपसर्ग विजित करने को, सबके पालन हारे॥2॥
पार्श्वनाथ के अतिशय देखो, वैर विरोध मिटायें।
रोग शोक की पीड़ा हर कर, संकट युद्ध जितायें॥
पुत्र संपदा शांति सफलता, कल्पवृक्ष सम देते।
ग्रह नक्षत्र जहर भय चिंता, चिंतामणि हर लेते॥3॥
अधिक कहें क्या छत्री वाले, पार्श्वनाथ की महिमा।
कर्म शत्रुओं के दल.बल को, भस्म करे प्रभु गरिमा॥
भक्त पुजारी सुख शांति से, धार्मिक समय बिताएँ।
सो 'विद्या' के 'सुव्रतसागर', पार्श्वनाथ गुण गाएँ॥4॥

(दोहा)

पार्श्वप्रभु हम भक्त की, खींचे रहना डोर।
सुखी स्वस्थ संसार हो, बढ़ें धर्म की ओर॥

ॐ ह्री छत्री वाले बाबा श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चय जयमाला पूर्णार्घं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दु:खों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

छत्री वाले पार्श्वनाथ महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री पार्श्वनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री छत्री वाले बाबा जी, अतिशयकारी जिनराजा जी।
हैं संकटमोचक विघ्नविनाशक स्वामी, जय–जय अंतर्यामी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इंद्र नरेद्र सुरेद्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शांति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गायें प्रभु की कथा कहानी, बन जायें ज्ञानी–ध्यानी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।

आरती

(छूम छूम छना ना...)

छूम छूम छन न न बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
सात फणी शुभ परिकर धारी, पद्मासन में अतिशयकारी–2
छत्री वाले बाबा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा की आँखों के तारे–2
जन्म बनारस धारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता–2
मुक्तिवधु के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि–सिद्धि सुखशांति दिलाओ–2
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

छत्री वाले पार्श्वनाथ चालीसा

(दोहा)

अतिशय कारी पार्श्व हैं, अतिशय क्षेत्र महान।
छत्री मंदिर शिवपुरी, सबको हैं वरदान॥
पार्श्व बुलाए शांति को, करते जग कल्याण।
चालीसा के रूप में, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(चौपाई)

जय जय पारसनाथ जिनेश्वर, छत्री वाले जय धर्मेश्वर ।
संकटमोचक अंतर्यामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥1 ॥
श्याम सलोने जय सांवलिया, जगत हितैषी सबसे बढ़िया।
जय उपसर्ग विजेता स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥2 ॥
जन्म बनारस नगरी धारे, अश्वसेन वामा सुत प्यारे।
शुरू से धार्मिक अवधिज्ञानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥3 ॥
नाना काठ जलाने वाले, उसमें नाग नागिनी काले।
णमोकार की दे दी वाणी, तुमको बारम्बार नमामी ॥4 ॥
नाग नागिनी स्वर्ग गए हैं, धर्णेंद्र पद्मावती हुए हैं।
फिर उपजी वैराग्य कहानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥5 ॥
जातिस्मरण से मुनि पद पाये, चार माह छद्मस्थ बिताये।
कमठ दिया उपसर्ग निशानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥6 ॥
हुए नहीं विचलित मुनि थोड़े, कर्म श्रंखला ध्यानी तोड़े ।
सभा सजाएँ केवलज्ञानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥7 ॥
मोक्ष गए सम्मेद शिखर से, स्वर्ण भद्र के कूट प्रवर से।
सिद्ध प्रसिद्ध तभी से स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥8 ॥
चौबीसी में रहे अनूठे, तुमको पूज पुण्य जग लूटे।
छत्री मंदिर के भी स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥9 ॥
ग्राम खलारा में प्रकटे थे, चोर चुराने को झपटे थे।
उलट गये पर गये न स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥10 ॥
ग्राम देवता लोग पुकारें, फोड़ नारियल भाग्य संवारें।
मिले बहुत मुश्किल से स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥11 ॥

सन्मतिसागर गुरु की निष्ठा, नब्बे में फिर हुई प्रतिष्ठा।
फिर विख्यात हुए कल्याणी, तुमको बारम्बार नमामि ॥12॥
पारसनाथ सप्तफणधारी, अतिशयकारी परिकर धारी।
पद्मासनी भेद-विज्ञानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥13॥
एक बार जो दर्शन पाए, वह तो पूजन पाठ रचाये।
उसको हुए आप वरदानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥14॥
हटे नजर ना नजर न आए, लगे नजर न नजर सुहाय।
ऐसे आप रहे कल्याणी, तुमको बारम्बार नमामि ॥15॥
भक्तों के हर काम बनाते, दुख संकट उपसर्ग मिटाते।
अतः बुलाए शांति स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥16॥
शांतिनाथ चौबीसी धारी, खडगासन प्रतिमा मनहारी।
अद्वितीय परिकर के स्वामी, तुमको बारम्बार नमामि ॥17॥
पार्श्वनाथ दुख कष्ट मिटाएँ, शांतिनाथ सुख शांति दिलाएँ।
दोनों की जोड़ी वरदानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥18॥
हाथ जोड़कर यही प्रार्थना, पूरी कर दो भक्त भावना।
मिले चरण रज मुक्ति दानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥19॥
रोग शोक भय ना हों भारी, नहीं महामारी बीमारी।
विश्व सुखी हो 'सुव्रत' ज्ञानी, तुमको बारम्बार नमामि ॥20॥

(सोरठा)

चालीसा का पाठ, करते हैं श्रद्धान से।
हो भक्तों के ठाठ, पार्श्व शांति भगवान से॥
ऋद्धि-सिद्धि सम्मान, मिले सभी संसार में।
कर नमोऽस्तु धर ध्यान, आये तेरे द्वार में॥

===

भजन

(लय–दुनियाँ से मैं हारा तो...)

सुनकर सुयश तुम्हारा, मैं आया तेरे द्वार।
सुनकर अतिशय तेरे, मैं आया तेरे द्वार।
ओ! छत्री वाले बाबा, मेरा कर देना उद्धार॥

मैंने सुना तुम तो, बड़े हो दयालु।
उनको संभालो जो हैं, तेरे श्रद्धालु॥
सुनलो मेरी अर्जी, हे! जग के पालनहार।
ओ! छत्री वाले बाबा, मेरा कर दो देना उद्धार॥1॥

अगर न सुनोगे मेरी, अर्जी ओ! देवा।
तब तो तुम्हें ही सारा, जगत दोष देगा॥
पारस कृपा करो जी, बरसाओ करुणाधार।
ओ! छत्री वाले बाबा, मेरा कर देना उद्धार॥2॥

नहीं चाहिए मुझको, रत्नों की माया।
न धन के खजाने ना ही, सुंदर सी काया॥
विद्या भजकर चाहें, पारस जैसा भंडार।
ओ! छत्री वाले बाबा, मेरा कर देना उद्धार॥3॥

अगर तेरे दर भी, सेवक लुटेंगे।
विश्वास कैसे फिर हम, तुम पर रखेंगे॥
'सुव्रत' लुट न जाये, करो इतना प्रभु उपचार।
हम सब लुट न जायें, करो इतना प्रभु उपकार॥
ओ! छत्री वाले बाबा, मेरा कर देना उद्धार॥

===

भजन

(लय–कुण्डलपुर की धूल...)

अपने पारस प्रभु को सिर झुकाने आए हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥

अतिशयकारी महिमाधारी, दुख उपसर्ग विजेता हो।
संकटमोचक विघ्नविनाशक, मोक्षमार्ग के नेता हो॥
हम भी पारस प्रभु की महिमा गाने आये हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥ 1॥

जो भी द्वार तुम्हारे आए, उनको दिए सहारे हो।
जिसने जीवन तुमको सौंपा, उनकी नैया तारे हो॥
चरणों में हम अर्जी आज लगाने आए हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥ 2॥

जिसने तुमको मन से ध्याया, उनकी बात निराली हो।
रोग शोक दुख दर्द हरें वे, उनकी रोज दिवाली हो॥
ऋद्धि सिद्धि सुख समृद्धि पाने आए हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥ 3॥

अपनी करुणाधार बहाकर, सुखी स्वस्थ संसार करो।
विश्व शांति हो घर–घर मंगल, ऐसा आशीर्वाद करो॥
'सुव्रतसागर' 'विद्या' द्वीप जलाने आए हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥ 4॥

अपने पारस प्रभु को सिर झुकाने आए हैं।
छत्री वाले बाबा को मनाने आए हैं॥

===

आरती

(छत्री वाले श्रीपार्श्वनाथ भगवान की)

तुम भी करो हम भी करें, जिनवर की आरती।
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥

पारसप्रभु अतिशय कारी विराजे,
अश्वसेन राजा वामा माँ के राजे।
काशी के नंदन को शिवपुरी निहारती,
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥
तुम भी करो हम भी करें... ॥1॥

राजपाट रानी सुख तुमको ना भाये,
बाल ब्रह्मचारी वैरागी कहलाये।
मुनि से उपसर्गों की आपत्ति हारती,
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥
तुम भी करो हम भी करें... ॥2॥

दुख संकट उपसर्गों के तुम विजेता,
मुक्ति के मारग के तीर्थंकर नेता।
भक्तों की श्रद्धा तो तुमको पुकारती,
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥
तुम भी करो हम भी करें... ॥3॥

नर चक्री इंद्रों के आराध्य तुम हो,
ज्ञानी ध्यानी मुनियों के शिव साध्य तुम हो।
हमको भी देना तुम आतम की भारती,
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥
तुम भी करो हम भी करें... ॥4॥

पारस के दरबार में जो भी आये,
मुँह-माँगा वरदान झोली में पाए।
'सुव्रत' से भक्तों को कृपा भी तारती,
छत्री वाले बाबा पारस प्रभु की आरती॥
तुम भी करो हम भी करें... ॥5॥

===

छत्री वाले श्री शांतिनाथ पूजन

स्थापना (शंभु)

श्री शांति प्रभु को नमोऽस्तु कर, चरणों की पूजन रचा रहे।
अतिशयकारी छत्री वाले, चैतन्य शांति पर लुभा रहे॥
ये रोग शोक दुख दूर करो, प्रभु हृदय कमल पर वास करो।
हम भक्ति करें तुम शांति करो, जग जीवों में उल्लास भरो॥

(दोहा)

शांतिनाथ भगवान हैं, जग में श्रेष्ठ महान।
नमोऽस्तु कर हम पूजते, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...।(पुष्पांजलिं...)

(जोगीरासा) (लय–पिच्छी रे पिच्छी...)

शांति रे शांति हमें शांति कब, दोगे अतिशयकारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...
हमें पराये या फिर अपने, कौन दुखी करते हैं।
हम ना समझें हम हैं बुद्धु, जनम-जनम मरते हैं॥
निज पर कृत हरने को अशांति, जल की धारा ढारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

खुद को खुद हम स्वयं तपाएँ, दोष दूसरों को दें।
उस गड्ढे में खुद गिर जाएं, जो औरों को खोदें॥
राग द्वेष की ज्वाला हरने, चंदन धारा ढारी।
हम तो सादर करे नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अपना घर खुद अस्त-व्यस्त कर, किसे शांति मिल पायी।
हमें शांत होने के पहले, शांति नगरिया भायी॥
अक्षय परम शांति को पाने, पुण्य धरें नर-नारी
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

यहाँ महारानी रानी से, मिली न शांतिरानी।
जिसे शांति रानी मिल जाए, मिले मुक्ति की रानी॥
विश्व-शांति की आत्म-शांति की, खिले पुष्प फुलवारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खाने को जो लड़ते रहते, लड़-लड़ कर जो खाते।
उन्हें न पलभर मिले शांति जो, रोज अशांति मचाते॥
समता रखकर ममता खाएँ, यों नैवेद्य हमारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जले तो मिले उजाला, अगर बुझे तो काला।
शांति रखो तो शांति मिलेगी, अशांति से मुँह काला॥
आत्म-शांति के दर्शन करने, दीप ज्योति उजियारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पाप महल के हम निर्माता, चाहें पुण्य बहारें।
ऐसा कभी न हो सकता सो, सहें कर्म की मारें॥

दिया कर्म सिद्धांत शांति का, सो हम हैं आभारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

बुरे काम का बुरा नतीजा, अपनी शांति नशाए।
फिर भी बुरा न छोड़े जग सो, निज घर अलग वसाए॥
हमें भक्ति का मिले मोक्षफल, छूटे दुनियादारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अगर शांति जग में होती तो, आप यहीं पर होते।
धर्म-मोक्ष-पुरुषार्थ न होते, जीव दुखी ना होते॥
लेकिन ऐसा दिखे न सो यह, लाए अर्घ्य पुजारी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, अब है आपकी बारी॥
शांति बोलो ना...

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल...) (अकेला दोहा भी पढ़के अर्घ्य चढ़ा सकते हैं)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[२]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[२]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा....नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो...

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शांति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर...)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शांति जन्मे...शांतिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शांतिनाथ जी
सौधर्म शचि सह आये, कि अभिषेक मेरु पे करें... शांतिनाथ जी
नृप विश्वसेन हर्षाये, कि जन्म कल्याणक है... शांतिनाथ जी

(दोहा)

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शांति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा, झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य
जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग रे चेतन जाग। धार ले वैराग्य।

(दोहा)

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशांति शोर।
शांतिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना,तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाये, केवलज्ञानी हों अर्हन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शांतिनाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शांति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥

कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता, ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥

(दोहा)

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जीवन की शुरुआत से, रहे अंत तक ध्यान।
प्रथम-प्रथम आराध्य हैं, शांतिनाथ भगवान॥

(हरिगीतिका)

सो जिंदगी में कुछ करो कुछ भी करो कुछ भी करो।
श्री शांतिनाथ जिनेंद्र को, करके नमोऽस्तु ही करो॥
सो कष्ट दुख उपसर्ग संकट, कुछ नहीं आ पाएगा।
निर्विघ्न क्या सानंद सब, संपन्न होता जाएगा॥1॥
सिद्धांत रखकर ध्यान में ये, कर रहे शुभ काम हैं।
करके नमोऽस्तु गा रहे, जयमाल प्रभु गुणगान हैं॥
जो शांति ना ब्रह्माण्ड में, ना विश्व ना संसार में।
परदेश में ना देश में ना, ही शहर-घरबार में॥2॥
ना स्वर्ग की सिंहासनों, ना इंद्र के अवतार में।
ना चक्रि के साम्राज्य में ना, भू गगन विस्तार में॥
ना वित्त में ना चित्त में, ना ही तिरियाचारित्र में।
वो शांति तुमने खोज ली, मुक्तिवधू के चित्र में॥3॥
उस शांति पर मोहित हुए हम, जीव जिसको हैं झुके।
अनमोल है वो ही खजाना, आप जिसको पा चुके॥
जिसके बिना सब व्यर्थ है, सिद्धांत निजपर धाम के।
संबंध पद संपत्तियां भी, जिस बिना किस काम के॥4॥
श्री शांतिनाथ जिनेंद्र जी, उस शांति के भंडार हो।
वह शांति हमको दीजिए प्रभु, तुम बड़े दातार हो॥
राजा प्रजा को शांति दो, हर देश को इंसान को।
सुख शांति सुव्रत प्राप्त कर लें, बस यही वरदान दो॥5॥

(दोहा)

शांतिनाथ भगवान के, है अनंत गुणगान।
हम तो बस सादर करें, रोज नमोऽस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र-छत्रीमंदिर-शिवपुरी-स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शांतिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शांतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री शांति-कुंथु-अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शांति-कुंथु-अरनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार।
पूजा के पहले करें, शीश झुका सत्कार॥

(ज्ञानोदय)

शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेश्वर, तीन-तीन पद के धारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, क्रम-क्रम से जग हितकारी॥
पूजा करने भाव बनाये, द्रव्य सजाये मनहारी।
हृदय कमल पर आन विराजो, तीनों भगवन उपकारी॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जीवन की जो रही परीक्षा, नाम उसी का मरण रहा।
जनम बुढ़ापा उसके साथी, इनसे काई नहीं बचा॥
सफल परीक्षा में होने को, प्रासुक जल यह अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

तपकर कंचन कंचन सा हो, हार गले का बन चमके।
किन्तु नाथ! हम भवाताप से, आज तलक तो ना चमके
ताप हरें कुन्दन से चमकें, सो चन्दन यह अर्पित है।

शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

ऊँचाई पर जाना हो तो, सूर्य ताप सहना होगा।
शाश्वत पद को पाना हो तो, सम्यक् तप करना होगा
सम्यक् तप कर शाश्वत बनने, उज्ज्वल अक्षत अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान...।

छेद काष्ठ में कर सकता पर, भ्रमर फूल में फँस मरता।
त्यों चेतन सुख वाला है पर, काम व्यथा से दुख सहता
ब्रह्मचर्य सौरभ महकाने, पुष्प पुंज यह अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी पेट को कभी जीभ को, कभी मनोगत इच्छा को।
पापी बन जाती है दुनियाँ, भूल आपकी शिक्षा को
क्षुधा मिटाने नैवेद्यों की, श्रेष्ठ भेंट यह अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

असुरक्षित दीपक ज्यों बुझते, आँधी तूफानों द्वारा।
त्यों ही तुम बिन हम भक्तों के, जीवन में है अँधयारा
उजयारा तुम सम पाने को, जगमग दीपक अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो धुँआ राख के, साथ सुगन्धी भी फैले।
पर कर्मों की रज से हम तो, सदा रहे मैले-मैले
नाथ! आपकी पद रज पाने, धूप सुगन्धी अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

नहीं परीक्षा से हम डरते, किन्तु कटुक फल से डरते।
मधुर-मधुर फल पायें खायें, यह इच्छा भी ना रखते
लेकर दीक्षा मुक्ती पाने, प्रासुक फल यह अर्पित है।

शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शांति-कुंथु-अरनाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो गर्भमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शांति-कुंथु-अरनाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्ममङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शांति-कुंथु-अरनाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः तपोमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शांति-कुंथु-अरनाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो ज्ञानमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

शांति-कुंथु-अरनाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षमङ्गलमण्डिताय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीनों पदधारी रहे, शांति-कुंथु-अरनाथ।
जयमाला के पूर्व में, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शांतिनाथ की, जग के शांति प्रदाता की।
जय हो! जय हो! कुंथुनाथ की, सबके आश्रयदाता की॥

जय हो! जय हो! अरहनाथ की, त्रद्धि-सिद्धि सुख दाता की।
शांतिकुंथुअरनाथ जिनेश्वर, जय हो! भाग्य विधाता की ॥1॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदवी धारी।
कामदेव के रूप जन्म ले, दुनियाँ मोहित की सारी॥
जिनको देख युवतियाँ नारीं, निज शृंगार भूलती थीं।
गोदी में बच्चे उल्टे ले, भोजन पान भूलती थीं॥2॥
षट्खण्डों के अधिपति बनकर, शौर्य पराक्रम दिखा दिये।
जिससे दुश्मन राजाओं के, जग में छक्के छुड़ा दिये॥
चौदह रत्न नवोनिधि पायीं, छ्यानवें हजार रानी थीं।
चक्ररत्न पा चक्रवर्ति हो, ली दीक्षा कल्याणी भी॥3॥
तीर्थंकर हो धर्मचक्र से, समवसरण को सजा दिया।
कर्मचक्र को नष्ट किया फिर, मुक्तिवधू को रिझा लिया॥
तीन लोक के उच्च शिखर पर, नाथ! विराजे हैं जाकर।
हम तो वहाँ न जा सकते सो, करें अर्चना गुण गाकर॥4॥
अब तो केवल यही प्रार्थना, शांतिप्रभु दो शांति हमें।
कुंथुनाथ जी करुणा कर दो, अरहनाथ दो मुक्ति हमें॥
है विश्वास आश भी पूरी, हमको आप निहारोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, हम भक्तों को तारोगे॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शांति-कुंथु-अर प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शांति-कुंथु-अर राय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री चौबीसी पूजन

(मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शंभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनंत॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकायें शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाये प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चन्दन सम प्रभु के धाम, चन्दन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चन्दन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदन...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बंध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाये जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाये जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शंभव संभव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ 1॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।

जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥2॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥3॥
जय विमलनाथ हो चित बसन्त, जयजय अनंत प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शांतिप्रदाता शांतिनाथ॥4॥
जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥5॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय रिद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥6॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जायें।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गायें॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हरषे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शांति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गयी जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चन्दन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कांति भी अद्‌भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आये चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किये सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गये, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चन्द्रप्रभु भगवान् के, गुण-गण जग विख्यात।
जयमाला के नाम हम, कहते अपनी बात॥

(ज्ञानोदय)

महासेन नृप लक्ष्मणा के, राज कुँवर चंदा स्वामी।
चन्द्रपुरी के चन्द्र चकोरे, चित्त चोर अंतरयामी॥
चाँदी-चाँदी सबकी करते, चाँदी जैसे चमक रहे।
तभी भक्त चाँदी सोना ले, चन्द्र चरण में चहक रहे॥ 1॥
चारु चन्द्र की चमक चाँदनी, चंदन उनको रुचते क्या?।
जिनने दर्शन किये आपके, सूर्य चाँद वे भजते क्या?॥
चकनाचूर हुयी चंचलता, चन्द्रप्रभु की चर्चा से।
चूर-चूर अभिमान हुआ फिर, नाथ! आपकी अर्चा से॥ 2॥

अर्चा करना भूल गये हम, फँसकर दुनियाँदारी में।
तभी हमारी किस्मत फूटी, यारी रिश्तेदारी में॥
हमने जिसको सगा समझ के, अपना सब कुछ सौंपा है।
दगाबाज बन उस प्राणी ने, छुरा पीठ में घोंपा है॥ 3॥
समझ हितैषी जिस मानव को, भगवन् जैसा पूजा है।
मतलब निकला तो उसका मुँह, हमें देखकर सूजा है॥
जिन्हें बात करना सिखलाये, वही हमें फटकार रहे।
जिन्हें पिलाया अमृत हमने, वही जहर दे मार रहे॥ 4॥
फूल माल जिनको पहनायी, बने गले का वे फंदा।
जिनको रत्नों सा चमकाये, वे हमको कहते गंदा॥
नाथ! बात हम कहें कहाँ तक, अपनी करुण कहानी की।
हुआ हमारा जीवन ऐसा, ओस बूँद ज्यों पानी की॥ 5॥
ये नशने से बच जाता है, नाम आपका सुनकर के।
फिर भी चन्दा ग्रह में बाँधे, लोग सोम दिन चुनकर के॥
समंतभद्र की सुनकर भक्ति, हुए प्रकट तो शोर हुआ।
जैनधर्म का बिगुल बजा तो, अतिशय चारों ओर हुआ॥ 6॥
ऐसा अतिशय अब दिखला दो, विघ्न कष्ट दुख नाश करो।
दुनियाँ मोक्ष महल बन जाये, सबके दिल तुम वास करो॥
व्यसन बुराई पाप मिटें सब, दया अहिंसा महक उठें।
'सुव्रत' अपना धर्म समझ के, चंदा जैसे चमक उठें॥ 7॥

(दोहा)

छंद शब्द का ज्ञान ना, फिर भी भक्ति अथाह।
चन्द्रप्रभु को पूज हम, चलें मुक्ति की राह॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हममें, नाथ! आपको बुला सकें।
करें महोत्सव, भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जायेगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोष हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मद-होश।
छींटा मारो ज्ञान का, आये हम को होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आये, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु,कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आये, अब तो तपा नहीं जाता।
राग द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वंदन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुये सिद्धालय में।
भूख प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुये तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पायें परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाये बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥
दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन गृह में आतम की, सोन चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहंता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्ट द्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : बाजे कुल्डलपुर में बधाई...)

हुआ चम्पापुर में महोत्सव[२], कि स्वर्गों से देव आये[२],वासुपूज्यजी।
माँ ने सोलह सपने देखे[२], कि त्रिलोकीनाथ आये[२], वासु....
माँ जयावती हर्षायी[२], कि गर्भ में पूज्य आये[२], वासु....
आषाढ़ कृष्ण छठ आई[२], कि सुर नर गीत गाये[२] वासु....
कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बाजे चम्पापुर में बधाई², कि नगरी में पूज्य जन्मे², वासु....
घड़ी जन्मोत्सव की पाई², कि त्रिलोक में आनंद छाये², वासु....
अभिषेक हुआ मेरु पर², कि देव क्षीर जल लाये², वासु....
फागुन वदि चौदस आई², कि शचि सुर नर झूमें², वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन वदि चौदस आई², कि प्रभु हुये वैरागी², वासु....
लौकांतिक देव पधारे², कि बने तप सहभागी², वासु....
फिर पुष्पाभा शिविका से², कि वन मनोहर पहुँचे², वासु....
झट नमः सिद्धेभ्य कहकर², कि केशलौंच किये त्यागी², वासु....
चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गये, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब दूज माघ सुदि आई², कि घातिकर्म सब नाशे², वासु....
तब बने केवली स्वामी², कि लगा समवसरण प्यारा², वासु....
फिर खिरी दिव्यध्वनि मंगल²,कि गूँजे जय-जयकारे², वासु....
बही तत्त्वज्ञान की धारा², कि धर्म ध्वजा फहराई², वासु....
दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनंतों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों सुदि चौदस आई², कि कर्म सारे हर डाले², वासु....
हुई मुक्ति वधू नत नयना², कि वरमाला तुम्हें डाली², वासु....
हुई चंपापुर से मुक्ति², कि पाँचों कल्याण हुये², वासु....
बाजे चंपापुर शहनाई², कि प्रभु को मोक्ष हुआ², वासु....
भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनंत चौदस साथ।
चंपापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनायें भा करके, बारह विधि के बजा दिये।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिये॥ 1॥
जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य, वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हरले, संकट महाभयंकर जो॥ 2॥
एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।
राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥ 3॥
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।
भोग स्वर्ग सुख, सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥ 4॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥ 5॥
एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ 6॥
आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।

एक हजार वर्ष तक रहकर, चंपापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बंधन हर वंदित होकर॥ 7॥
ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे, और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चंपापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥ 8॥
जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥
ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥ 9॥
अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
रागद्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥10॥
मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी ब्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥ 11॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाए मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइये, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥
मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥
आतमा की शांति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ायें जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥

आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुये।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुये॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥
आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मंडप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मंडप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥

हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ श्रद्धा से चढ़ायें, धर्म से हर काम हो।
जाप जप कर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुये कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुये नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घाति कर्म संसार।
धर्म संत अर्हन्त को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्ष धर्म प्रभु पाए।
सुदत्त कूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

अधर्म से ऊँचे उठे, छुये धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिये धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्म प्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्म धुरंधर धीरा, धर्म, धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्म तीर्थ के पालक,अपना कैसा है नाता॥ 1॥
जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ 2॥
एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजा पालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥ 3॥
बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थ सिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुये।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुये॥ 4॥
कुमार काल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥ 5॥
हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥
पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुये।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुये॥ 6॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥
धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर॥ 7॥

धर्म देशना धर्म ध्वजा दे, किये विहार बन्द स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गये।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे॥ 8॥
दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥
धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥9॥
तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धार कर पाप नाश कर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥ 10॥
उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोह पंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में,'सुव्रत' को बुलवा लो ना॥ 11॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हर कर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुये, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन ! हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आयी टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिये, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिये।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्! अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं ...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाये।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चन्दन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाये।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुये।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुये॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को,प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चन्दन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

प्राणत नामक स्वर्ग त्याग जब, श्रावण कृष्णा दूज रही।
सोमा जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब वैशाख कृष्ण की दशमी, नगर राजगृह जन्म लिया।
श्री सुमित्र राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

तज वैशाख कृष्ण दशमी को, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तिथि वैशाख कृष्ण नवमी को, घाति कर्म सब नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस फाल्गुन कृष्ण रात में, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, हम पायें सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बंधन सहना, नाथ हमारा मिट जाये।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आये श्री भगवान्॥ 1॥
बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ 2॥
आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाये केवलज्ञान।
समवसरण में हुये सुशोभित,दिये मुक्ति का ज्ञान॥ 3॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाये, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ 4॥
आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ 5॥
कथा आपकी व्यथा नशाये, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ 6॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शांतये शांतिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

श्री महावीर पूजन

स्थापना

जय महावीर-जय महावीर।
शासननायक-जय महावीर॥

(ज्ञानोदय)

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनायें।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गायें॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी,भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आये मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥
जय महावीर-जय महावीर। शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानंदन, पाँच नाम को तुम धारो।

वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ायें शिव पद पायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ायें काम नशायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से,कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुये पर, कर्म झुलस भी ना पाये।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आये॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ायें हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल, अर्पण ये फल,पाँच नाम को तुम धारो।

वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आये वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किये सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिये दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(विष्णु)

बार-बार नर जीवन पा के, व्यर्थ गवाँ डाले।
हे प्राणी! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले॥
भाव भक्ति से गद्गद् होकर, प्रभु से नेह लगा।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा॥1॥

जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इंद्र हुआ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ॥
वीर! ज्ञान से जान मेरु को, दबा दिये थोड़े।
रखा इंद्र ने 'वीर' नाम तब, पूजन को दौड़े॥2॥

जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके॥
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुयी।
नाम आपका 'वर्द्धमान' तब, रखकर खुशी हुयी॥3॥

संजय विजय मुनि ऋद्धिधारी, जिज्ञासा लाये।
तत्त्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाये॥
और खुशी से नाम आपका, 'सन्मति' रख डाले।
धन्य! धन्य! हे त्रिशला नंदन! सबके रखवाले॥4॥

खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे।
संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे॥
सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर।
'महावीर' तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर॥5॥

हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा।
इसे वीर! वश करने निकले, माना नहीं कहा॥
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला।
तभी नाम 'अतिवीर' आपका, जग ने रख डाला॥6॥

पाँच-पाँच नामों के धारी, शासननायक हो।
जय हो! जय हो! नाथ आपकी, सबके पालक हो॥
पंचम गति का हमें लाभ हो, ऐसी करो कृपा।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा॥7॥

बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें॥
बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली॥8॥

(दोहा)

भक्ति सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

भजन-श्री छत्री वाले बाबा

(रचयिता-परमपूज्य समाधिसम्राट आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज)

संकट हमारे मिटाय दियो जी, छत्री वाले बाबा।
छत्री वाले बाबा हो, आदिनाथ बाबा॥
आदिनाथ बाबा हो, पार्श्वनाथ बाबा।
हमको भी पार लगाय दियो जी, छत्री वाले बाबा॥
संकट हमारे...

जो जो शरण तुम्हारी आवे, मनवांछित फल सहसा पावे।
मुझको भी पार लगाय दियो जी, छत्री वाले बाबा॥
संकट हमारे...

चरण पादुका जन-मन मोहे, बाजू में जिन गुरुवर सोहे।
पारस शक्ति दिखाय दियो जी, छत्री वाले बाबा॥
संकट हमारे...

दर्शन से निज दर्शन होता, मिथ्या मोह सहज में खोता।
अनुभव प्रभु कराय दियो जी, छत्री वाले बाबा॥
संकट हमारे...

'सन्मति' शरण लही है तेरी, भव-भव की मिट जाय फेरी।
शिवपुर राह दिखाय दियो जी, छत्री वाले बाबा॥
रखियो लाज हमारी जी, छत्री वाले बाबा।
संकट हमारे...

दीपावली पूजन विधि

अनादिकाल से भरतक्षेत्र में अनंत चौबीसियाँ होती आयी हैं, इसी क्रम में इस युग में ऋषभनाथ से लेकर महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर हुए। तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के २५६ वर्ष साढ़े तीन माह के बाद अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी को कार्तिक सुदी अमावस्या को मोक्ष प्राप्त हुआ था तथा उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को आपराह्निक काल में उसी दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसी के प्रतीक रूप में कार्तिक वदी अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

विधि—प्रातःकाल सूर्योदय के समय स्नानादि करके पवित्र वस्त्र पहिनकर जिनेन्द्र देव के मन्दिर में परिवार के साथ पहुँचकर जिनेन्द्र देव की वन्दना करनी चाहिए। तदुपरान्त थाली में अथवा मूलनायक की वेदी पर सोलह दीपक चार-चार बाती वाले जलाना चाहिए तथा भगवान महावीर स्वामी की पूजन, निर्वाणकाण्ड पढ़ने के पश्चात् महावीर स्वामी के मोक्षकल्याणक का अर्घ्य बोलकर निर्वाण लाडू अर्घ्य सहित चढ़ाना चाहिए।

घर पर दीपावली पूजन विधि

अपराह्नकाल गोधूली बेला (सायं ४ से ७ बजे तक) में घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में अथवा घर के मुख्य कमरे में पूर्व की दीवार अथवा सुविधानुसार दीवार पर माण्डना (श्री, श्री, वाला) बनाकर चौकी के ऊपर जिनवाणी एवं भगवान महावीर स्वामी की तस्वीर रखनी चाहिए। घर के मुखिया अथवा किसी अन्य सदस्य को एवं सभी सदस्यों को पूजा के शुद्ध वस्त्र पहनकर दीप मालिका के बायीं तरफ आसन लगाकर बैठना चाहिए तथा सामने वाली चौकी पर सोलह दीपक जो कि सोलहकारण भावना के प्रतीक हैं। (इन्हीं सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध भगवान महावीर स्वामी ने किया था, इसी के प्रतीक स्वरूप सोलह दीपक चार-चार ज्योतियों वाले जलाये जाते हैं। (१६X४=६४) यह ६४ का अंक चौंसठ ऋद्धि का प्रतीक है। भगवान महावीर चौंषठ ऋद्धियों से युक्त थे इन्हीं के प्रतीक स्वरूप यह चौंषठ ज्योति जलायी जाती हैं। अतः सोलह दीपक चौंषठ बातियों से जलाकर दीपकों में शुद्ध देशी घी उपयुक्त होता है। घृत की अनुपलब्धि पर यथायोग्य शुद्ध तेलादि का प्रयोग किया जा सकता है।) दीपकों पर सोलह

भावना अंकित करनी चाहिए। इन्हें जलाने के पश्चात् दीपावली पूजन, सरस्वती पूजन, चौंषठ ऋद्धि अर्घ्य, धुली हुई अष्ट द्रव्य से चढ़ाना चाहिए। पूजन से पूर्व तिलक एवं मौली बन्धन सभी को करना चाहिए।

दुकान पर पूजन—इसी प्रकार दुकान पर भी पूजन करनी चाहिए अथवा लघुरूप में पंचपरमेष्ठी के प्रतीक रूप पाँच दीपक जलाकर पूजन करनी चाहिए।

पूजन विसर्जन—शांति पाठ एवं विसर्जन करके तदुपरान्त घर का एक व्यक्ति अथवा बारी-बारी सभी व्यक्ति मुख्य दीपक को अखण्ड जलाते हुए रात भर णमोकार मंत्र का जाप अथवा पाठ या भक्तामर आदि पाठ करते हुए व्यक्ति अनुसार रात्रि जागरण करना चाहिए, यदि रात्रि जागरण नहीं कर सकें तो कम से कम मुख्य दीपक में यथायोग्य घृत भरकर उसे जाली से ढँककर उसी स्थान पर रात भर जलने देना चाहिए। शेष दीपकों में से एक दीपक मन्दिर में भेज देना चाहिए। यदि निकट में कोई सम्बन्धी रहते हैं तो वहाँ भी दीपक भेजा जा सकता है। अथवा शेष दीपकों को घर के मुख्य दरवाजे पर एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर रखे जा सकते हैं। मिष्ठान्न आदि का वितरण करना है तो पूजन समाप्ति के पश्चात् पूजन स्थल से थोड़ा दूर हटकर वितरित कर ग्रहण कर सकते हैं।

पूजा के पश्चात् पूजन निर्माल्य सामग्री पशु-पक्षियों का अथवा मन्दिर के माली को दी जा सकती है।

चौईस पत्तों की आम या आशापाला की बान्दरवाल बनाकर दरवाजे के बाहर बांधनी चाहिए जो चौबीस तीर्थंकरों की प्रतीक है।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं चतु:षष्टि ऋद्धिभ्यो नमः।

निर्वाण लाडू चढ़ाने वाले दिन सायं को श्रावकगण अपने-अपने घरों में दीपावली पूजन करते हैं। दीपकों का मनोहर प्रकाश करते हैं। श्री जिनमंदिर जी में व अपनी दुकानों पर दीपकों को सजाते हैं और मुदित होते हैं।

नोट—पटाखे कभी न चलायें, अनार, फुल्झड़ी, राकेट, चकरी आदि भी बिल्कुल न छोड़ें। इससे लाखों जीवों का घात होता है। पर्यावरण दूषित होता है। स्वयं को भी हानि हो जाती है।

सामग्री—अष्ट द्रव्य की थाली, दीपक, मंगल कलश, सरसों, श्रीफल, धूप, जिनवाणी, २ चौकी, २ पाटे, रोली, केशर घिसी हुई, कलम-दवात, फूलमाला, नई बही।

विधि—सायंकाल को उत्तम गोधूली बेला में अपने मकान या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर की तरफ मुँह करके पूजा प्रारंभ करें।

एक पाटे पर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर महावीर भगवान का मनोहर फोटो, जिनवाणी, दायीं तरफ घी का दीपक, बायीं तरफ धूपदान, मध्य में मंगलकलश स्थापित करें। एक पाटे पर अष्टद्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर द्रव्य चढ़ाने के लिए खाली थाली में स्वास्तिकादि बनाएँ।

पूजा गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया को शुद्ध वस्त्र पहनकर करना चाहिए। मुखिया के अभाव में घर के विशेष व्यक्ति को शुद्ध वस्त्र पहनना चाहिए।

पूजन विधि—पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं॥

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर सभी जनों को शुद्धि के लिए थोड़ा सा जल के हल्के छीटे दें–

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा।

सभी के दायें हाथ में निम्न मंत्र बोलकर रक्षासूत्र बाँधें–

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

दीपक प्रज्ज्वलित करते हुए निम्न प्रकार उच्चारें–

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपकं प्रज्ज्वलनं करोमि।

शास्त्रजी विराजमान करते हुए निम्न मंत्र उच्चारें–

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

(बही में अंकित करें)

श्री महावीर स्वामिने नमः

शुभ ॐ लाभ

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्रीऋषभाय नमः। श्री महावीर स्वामिने नमः। श्री गौतम गणधराय नमः। श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै नमः। श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः।

श्री शुभ मिति कृष्ण-अमावस्या वीर निर्वाण संवत्.....विक्रम संवत्.....दिनाँक.....मास.....सन्.....ई.....वार को श्री (दुकान मालिक का नाम).....की (प्रतिष्ठान का नाम).....की बही का शुभ मुहूर्त किया।

(यह विधि करके दुकान के प्रमुख व्यक्ति को बही देवें और पुष्प क्षेपण करें।)

॥ इति शुभम् ॥

पूजन प्रारंभ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

श्री देव-शास्त्र-गुरु अर्घ्य (हरिगीतिका)

ले अष्ट द्रव्यों के सुमिश्रण, अर्घ्य ये तैयार हैं।
श्रद्धा समर्पण और भक्ति, भक्त के त्यौहार हैं॥
त्यौहार करके नाँच गा के, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी अर्घ्य (लय-चौबीसी पूजा)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी-सरस्वती अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, देके भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ऋद्धिधारी मुनियों का अर्घ्य (अर्ध जोगीरासा)

सकल ऋद्धि मय ऋषि हो फिर भी, चहें मोक्षसुख आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसंपन्न सर्वमुनिभ्यो अर्घ्यं...।

आचार्यश्री विद्यासागरजी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

गौतम गणधर स्वामी पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान् को, कर नमोऽस्तु धर ध्यान।
गौतम गणधर को भजें, दीवाली निर्वाण॥

(ज्ञानोदय)

गुरु शिष्य भगवान् भक्त के, भारत से संबंध रहे।
महावीर गौतम गणधर से, भक्तों के अनुबंध रहे॥
सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, सो लाडू हम चढ़ा लिये।
गौतम बने केवली सो हम, दीप शाम को जला लिये॥
मिलके दीवाली उत्सव के, घर बाहर त्यौहार करें।
ज्ञानलक्ष्मी मोक्षलक्ष्मी, पाने जय-जयकार करें॥
गुरु बिन शिष्य अकेले तड़पें, अतः वेदना हरने को।
गौतम गुरु अब हृदय पधारो, अपने जैसे करने को॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मृत्यु भव दुख सागर को, वीर पार कर मुक्त हुए।
ध्यान नाँव से गौतम गणधर, ज्ञान-चेतना युक्त हुए॥
गुरु शिष्यों की धारा पाने, हम तो जल की धार करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

गुरु शिष्यों के रिश्ते ऐसे, जैसे महके चन्दन वन।
विनय प्रेम की छाया में फिर, शीतल हो तन मन चेतन॥
गुरु शिष्यों के रिश्ते पाने, हम तो चन्दन धार करें।

गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

जिनशासन की जिम्मेदारी, गौतम गणधर को देकर।
वीर हुए अक्षय अविनाशी, धर्म तीर्थ सबको देकर॥
नग्न निरम्बर संत न छूटें, सो चरणों में पुंज धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

शिष्य बाग खिलते तो उसके, गुरु माली वा मालिक हों॥
काम कीट फिर क्या कर लें जब, गुरु अपने संरक्षक हों॥
चेतन बाग खिले अपना भी, सो चरणों में पुष्प धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

गुरुवर निज अध्यात्म रसोई, केवल शिष्यों को परसें।
जिसके मुँह में पानी आये, वो दीक्षा लेने तरसें॥
गुरु शिष्यों के रस को चखने, पद में यह नैवेद्य धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सुबह करें पावापुर उत्सव, लाडू चढ़ा के मंदिर में।
गोधूली बेला संध्या में, दीवाली हो घर-घर में॥
गुरु शिष्यों के दर्शन करने, दीप आरती रोज करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

विश्व विजेता भी डर जाते, देख कर्म के भाटों को।
आत्म विजेता कर्म पछाड़ें, खोलें मोक्ष कपाटों को॥
गुरु शिष्यों सा शौर्य दिखाने, धूप जला हम हवन करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

गुरु शिष्यों की करते रक्षा, ज्ञान ध्यान की शिक्षा दे।
शिष्य करें गुरु आज्ञा पालन, गुरु चरणों में दीक्षा ले॥

यही बीज दे महा मोक्षफल, आओ! ऐसी फसल करें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

क्या होगा अस्तित्व शिष्य का, यदि गुरु का आशीष नहीं।
शिष्य बिना गुरुदेव अधूरे, उज्ज्वल धर्म भविष्य नहीं॥
गुरु शिष्यों का मिलन अनोखा, इक दूजे का ध्यान धरें।
गौतम गुरु को करके नमोऽस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दिव्य ध्वनि मुख्यश्रोता गौतम गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

केवलज्ञानी महावीर जब, छ्यासठ दिन तक मौन रहे।
क्या कारण है इन्द्र विचारे, गणधर बिन ध्वनि कौन सहे॥
तब गौतम 'त्रैकाल्यं' आदिक, सूत्र अर्थ जब कर न सके।
समवसरण में मान-स्तंभ कर, मिथ्यादृष्टि रह न सके।

(दोहा)

एकम श्रावण कृष्ण को, गौतम हर कर मान।
शिष्य बने सो ध्वनि खिरी, शासन चला महान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिमुख्यश्रोता गौतमगणधरस्वामिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दिव्य ध्वनि प्राप्त गौतम आदि ग्यारह गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, हमको अतः वियोग मिला।
गौतम गणधर बने केवली, संध्या में संयोग मिला॥
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, दो पर्वों से निज खोजें।
गौतमादि ग्यारह गणधर को, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥
भव्य-पुण्य से विहार करके, फिर जीवों को ज्ञान दिए।
क्षेत्र गुणावा पर जाकर के, निज-पर के कल्याण किए॥
मोक्ष बानवें वर्षों में पा, सिद्ध लोक को गमन किये।
गौतम गुरु को अर्घ्य चढ़ा हम, करके नमोऽस्तु नमन किये॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमादि-प्रभासपर्यन्त एकादश गणधरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

गौतम गणधर नाँव हैं, भवजल रहा अपार।
कर नमोऽस्तु जयमाल हो, होने को भवपार॥

(ज्ञानोदय)

तीन काल में तीन लोक में, तत्त्वों द्रव्य पदार्थों में।
मानव नित उत्सव प्रेमी है, मंगलमय परमार्थों में॥
दसलक्षण आदिक शाश्वत हैं, दीवाली नैमित्तिक है।
दीवाली की कथा समझ लो, जिसमें निहित आत्महित है॥१॥
वीर बने जब केवलज्ञानी, समवसरण की सभा सजी।
लेकिन छ्यासठ दिन तक प्रभु की, दिव्य देशना नहीं खिरी॥
शीघ्र इन्द्र ने अवधिज्ञान से, गणधर रहित सभा जानी।
कौन बनेगा गणधर प्रभु का, पता चला गौतम स्वामी॥२॥
ज्येष्ठ पुत्र जो पृथ्वी माँ के, ब्राह्मण थे वसुभूति पिता।
अग्निभूति अरु वायुभूति दो, इंद्रभूति के लघु भ्राता॥
वह विद्वान महा अभिमानी, फिर भी पाँच शतक चेले।
वृद्ध विप्र का भेष इन्द्र धर, गौतमपुर की ओर चले॥३॥
इंद्रभूति से कहे इन्द्र कुछ, मेरी शंका दूर करो।
'त्रैकाल्यं' का सूत्र अर्थ कह, मुझ पर कृपा जरूर करो॥
इंद्रभूति जिन सूत्र श्रवण कर, सोचे तीन काल क्या हैं।
द्रव्य काय पदार्थ षट् लेश्या, व्रत गति समिति ज्ञान क्या हैं॥४॥
हुए निरुत्तर इंद्रभूति तो, बोले गुरु से मिलवाओ।
होगा जब शास्त्रार्थ वहीं पर, समाधान तब तुम पाओ॥
शिष्य पाँच सौ तीनों भ्राता, वीर शरण में ज्यों आते।
देख मानस्तंभ मान हर, सम्यग्दर्शन पा जाते॥५॥
तत्क्षण ज्यों ही बने दिगंबर, ज्ञान मनःपर्यय पाये।
गौतमपुर के गौतम गणधर, प्रथम शिष्य तुम कहलाये॥
त्रेसठ ऋद्धिधारि शिष्य पा, छ्यासठ दिन के बाद अहा।
मिला वीरशासन हम सबको, दिव्य देशना खिरी महा ॥६॥
शिष्य पाँच सौ मुनिपद धारे, दोनों भाई बने गणधर।

राजगृही के विपुलाचल पर, प्रथम देशना को सुनकर॥
द्वादशांग अंतर्मुहूर्त में, गौतम गणधर गुँथित किये।
कुल ग्यारह गणधर के स्वामी, तीस वर्ष तक धर्म दिये॥७॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः, वीरा को निर्वाण हुआ।
तब गौतम को पावापुर में, संध्या केवलज्ञान हुआ।
सुबह चढ़ा के सब जन लाडू, शाम मनाते दीवाली।
धर्म लक्ष्मी दीपमालिका, पाई सबने खुशहाली॥८॥
क्षेत्र गुणावा में फिर जाकर, योग निरोध कर मुक्त हुए।
गुरु शिष्य के उत्सव पाकर, धन्य-धन्य हम भक्त हुए॥
गुरु शिष्य सिद्धत्व प्राप्त कर, कर्म रोग दुख नाश किये।
हमको मोक्ष घुमाएंगे प्रभु, ऐसा हम विश्वास किये॥९॥
ज्यों कोई अपनी संपत्ति, सौंपे नहीं नोकरों को।
यों ही हमको छोड़ न देना, खाने जगत ठोकरों को॥
वैर व्यसन निर्धनता हरकर, दिवस दशहरा कर देना।
वीरा गौतम सम उत्सव दे, रात दिवाली कर देना॥१०॥
गुरु शिष्यों के चरणों में ही, हर तीरथ का दर्शन हो।
सो दीवाली भज नयनों में, निर्मल सम्यग्दर्शन हो॥
सम्यग्ज्ञान पले वाणी में, चरण-चरण चारित्र चले।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, अंग-अंग वात्सल्य झरे॥११॥

(सोरठा)

गौतम प्रभु को ज्ञान, मिला वीर को पूजकर।
हम पाएँ निर्वाण, दीवाली को पूज कर॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

दीवाली के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री गौतम गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(इसके बाद यहाँ 'णमो जिणाणं' आदि 64 ऋद्धियों के अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं)

विद्यागुरु बुंदेली पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आये, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापौ फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गये, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कामदेव तौ तुमसैं हारौ, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लड्डुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खीच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥

इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रऔ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया कौ, तुमने करिया मौं कर दऔ।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दऔ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौंनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कौंनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
येई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाये, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला-1

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥1॥
एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौंन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, प्यांरौ चारौ और चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥2॥
तुम बैरागी हौ निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गय, ये में का कैंसौ अचरज।
गुरु के संगै मात-पिता के, गुरु बन गय जौ है अचरज॥3॥
मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नैं जावै।
कहूँ रमैं नैं जौ बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥4॥
कबउँ-कबउँ जौ मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥5॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥6॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शोभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गये छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥7॥

कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौंने-नौंने ग्रन्थ रचा दय, भौत बना दय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरत हैं॥8॥
ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥
इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥9॥
अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँईं मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥10॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

(पुष्पांजलिं)

===

जयमाला-2

(दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥

जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ये की महिमा न्यारी।
तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥1॥
लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥
जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥2॥
जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥3॥
महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भए हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
साँची कै दउं ये माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥4॥
भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावडों से जड़ माया, चेतन धन का कईये।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइये॥5॥
बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥6॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फिर भी नमोऽस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रई जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

गुरु वंदना

यूँ तो अपनी गुरु भक्ति का, इस दुनियाँ में अंत नहीं।
और सुनो धरती अंबर में, जिनवाणी सम ग्रंथ नहीं॥
णमोकार सम मंत्र नहीं है, मोक्षमार्ग सम पंथ नहीं।
संयमस्वर्ण महोत्सव धारी, **विद्यागुरु** सम संत नहीं॥

(दोहा)

माथ रहे गुरु पाद में, हिय में गुरु का ध्यान।
हाथ करें गुरु वंदना, वचन करें गुरु गान॥

मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बचपन से हम ज्ञान बिना ही, भटक रहे बनके बच्चे।
जनम-जनम के पाप मिटाने, आये हैं बनने सच्चे॥
जन्म जरा दुख मरण नशायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये जल अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव की ज्वाला धधक रही है, झुलस रहे हैं खड़े-खड़े।
शीतल वाणी चंदन सम है, छाया पाने चरण पड़े॥
भव का ये संताप मिटायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु चंदन अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत यह जीवन अपना, कैसे इसे सँवारे हम।
व्रत संयम से रक्षित होने, तुमको रोज पुकारें हम॥
तुम जैसे सु-व्रत हम पायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु अक्षत अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सोना चाँदी रुपया पैसा, जिन्हें चाहिए दो उनको।
सुंदर काया जिन्हें सुहाये, कामदेव कर दो उनको॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु हम पुष्प चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

व्यंजन बहुत तरह के भोगे, फिर भी तो होती इच्छा।
भूख मिटे ना प्यास मिटे ना, अब कैसे होगी दीक्षा॥

निज रस चखने दीक्षा धर लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु नैवेद्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

चेतन करें आप सम उज्ज्वल, जिससे चंदा शर्माये।
ज्ञान तेज इतना चमकायें, सूरज फीका पड़ जाये॥
अंतर्मन तुम सम उज्ज्वल हो, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये दीप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

संकट उपसर्गों में भी तुम, कर्म काटने चलते हो।
खिन्न न होते प्रसन्न रहते, समता धरकर खिलते हो॥
हम भी दुष्कर्मों को सह लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये धूप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

अगर डोर तुम बन जाओ तो, हम पतंग बन उड़ लेंगे।
अगर आप पतवार बनो तो, भवसागर हम तिर लेंगे॥
सदा आपके साथ रहें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये फल अर्पित हैं, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मुनिवर की पूजन करें, मन में अति हर्षाएँ।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, आओ हम सब गाएँ॥

(शंभू)

हे मुनिवर तेरे चरणों में, हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो जिनशासन के बेटे हैं, हम उनको शीश झुकाते हैं॥

जो विद्या गुरु के शिष्य रहे, पर अपने भाग्य सितारे हैं।
ऐसे सुव्रतसागर मुनिवर, सचमुच ही हमको प्यारे हैं ॥1 ॥
है ग्राम पीपरा जन्म लिया, उपकृत फिर सागर जिला किया।
पितु साबूलाल माँ चंद्रानी को, खुशियाँ देकर धन्य किया ॥
भाई सुनील के लघु भ्राता, तीनों बहनों के हो प्यारे।
लौकिक शिक्षा भी उच्च कोटि की, कॉलिज में भी थे न्यारे ॥2 ॥
जब सागर के भाग्योदय में, विद्या गुरुवर के दर्श किए।
तब अन्ठानवें में गुरुवर से, व्रत ब्रह्मचर्य 'राजेश' लिए ॥
फिर कृपा बड़ेबाबा की पा, संघस्थ हुए फिर गमन किया।
नेमावर में विद्यागुरु ने, दे दीक्षा 'सुव्रत' बना दिया ॥3 ॥
सु-व्रत पा सुव्रतसागर जी, अपने व्रत सुव्रत बना रहे।
अपनी मुनि चर्या पालन कर, अंतस में डुबकी लगा रहे ॥
प्रभु की भक्ति में डूबे तो, विधान अनेकों रचा दिये।
श्री पूज्य बड़ेबाबा विधान रच, अतिशय बाबा के बता दिये ॥4 ॥
जिनचक्र विधान में चौबीसों, जिनवर की महिमा दिखलाई।
श्री सिद्धचक्र अरिहंतचक्र में, शुद्धातम सी झलकाई ॥
भक्तामर एकीभाव और, कल्याणमंदिर विधान रचे।
रच समवसरण आदि अनेक, शायद कोई ना शेष बचे ॥5 ॥
रच बुंदेली पूजन विधान, बुंदेली संत प्रसिद्ध बने।
भक्तों को भक्ति-अर्चना को, श्रीजिनवाणी के छंद बने ॥
ऐसे अनेक पूजा विधान रच, पद्यानुवाद कई बना रहे।
जिनका आश्रय पा भव्य जीव, खुद को धर्मात्मा बना रहे ॥6 ॥
सुन स्वाध्याय प्रवचन इनके, संस्कारी रूप सज जाते हैं।
ऐसे बुंदेली संत हमें, जीवन का लक्ष्य बताते हैं ॥
हे! मुनिवर 'सुव्रतसागरजी', हमको भी सु-व्रत दान करें।
'संजय' का नमोऽस्तु स्वीकारें, सो सुव्रत धर कल्याण करें ॥7 ॥

ॐ ह्रः श्रीसुव्रतसागरमुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तुम जैसे हम भी धरें, विद्या के भण्डार।
विश्व शांति के भाव से, करें शांति जल धार॥

(शांतये शांतिधारा)

माँ जैसे बच्चे तुम्हें, करें सदा ही याद।
सो नमोऽस्तु सादर करें, देना आशीर्वाद॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती

मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

सुव्रतसागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें॥ सुव्रतसागरजी...

१. माँ चन्द्रानी के राजेश दुलारे,
पिता साबूलाल की आँखों के तारे।
जन्मे हैं पीपरा ग्राम, आज थारी...॥

२. विद्या गुरुवर से पाकर दीक्षा,
बनकर मुनि जब पाई है शिक्षा।
करने चले हो कल्याण, आज थारी...॥

३. जगमग दीपक हाथों में लायें,
मंगल-मंगल महिमा को गायें।
करके नमोऽस्तु बार-बार, आज थारी...॥

४. सुव्रत को पालें, सुव्रत के दाता,
भक्ति में रचते हैं लाखों गाथा।
सब पर लुटाते अपना प्यार, आज थारी...॥

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

अर्घ्यावली (प्राचीन)

चौबीसी भगवान का अर्घ्य

जल फल आठो शुचिसार, ताकौ अर्घ्य करौ।
तुमको अरपौं भरतार, भवतर मोक्ष वरौ॥
चौबीसो श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरांतान् चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीर गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हर्षाय।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चंद्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरव पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों॥
श्री चंद्रनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगे।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगै॥

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग-प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणा धारी, यातैं थारी शरनारी॥
श्री शांति जिनेशं, नुत शक्रेशं, वृष चक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुनधेशं, दया मृतेशं मक्रेशं॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरव अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरों॥
शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनंद भरन तारन, तरन विरद विशाल हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरव मिलाये।
अष्टम क्षिति के राजकरन कों, जजो अंग वसुनाय।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय जी दाता मोक्ष के॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ ते जजीजिये॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मद मोद धरो।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरो॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री बाहुबली भगवान का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धोसम, भवलोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना॥
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ्य सँजोकर लाया हूँ।
हे बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सोलहकारण भावना का अर्घ्य

जल फल आठों दरव चढ़ाय, द्यानत वरत करौ मन लाय।
परम गुरु होय, जय-जय नाथ परम गुरु होय॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परम गुरु होय, जय-जय नाथ परम गुरु होय॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, द्यानत पूजौ श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥
पाँचो मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाजी को करौ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-जिन चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपत हों।
द्यानत कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपितु हों॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री दसलक्षण धर्म का अर्घ्य

आठो दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लक्षण पूजों सदा॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि-दसलक्षण-धर्मेभ्यो अर्घ्यं...।

श्री रत्नत्रय धर्म का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम किये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-रत्नत्रय-धर्माय अर्घ्यं...।

श्री जिनवाणी का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु अरु, दीप धूप फल अति लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी मोक्षमई॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं...।

श्री निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, फल दीप धूपायन धरौ।
द्यानत करौ निरभय जगत सौ, जोरकर विनती करौ॥

सम्मेदगिरि गिरनार चंपा-पावापुर कैलाश को।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास को॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

भावों की निर्मल सरिता में, अवगाहन करने आया हूँ।
मेरा सारा दुख-दर्द हरो, यह अर्घ्य भेंटने लाया हूँ॥
हे तपोमूर्ति! हे आराधक!, हे योगीश्वर! हे महासंत।
है अरुण कामना देख सके, युग-युग तक आगामी बसंत॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अर्घ्यं...।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशा रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेह के॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्यपद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-

संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर - अष्टापद - गिरनार - चम्पापुर - पावापुर - कुंडलपुर - पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी-सेसई-छत्रीमंदिर शिवपुरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे - मध्यप्रदेशे-.....जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शान्तिहित शान्ति विधायक ॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघ को ॥
पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरुपूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे ॥

(जल-धारा...)

होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा ॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी ॥

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥

(चंदन-धारा)

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का ॥
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से ॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ, तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों क क्षय सुबोध सुखकारी ॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजें भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका,लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

===

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥2॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥3॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥4॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥5॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में॥6॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुये व्यसन अंधे में॥7॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥8॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥9॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय [1]कुलाचार न जाना॥10॥
जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।
या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥11॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥12॥
या पर से पाप कराये, या अनुमोदन मन भाये।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जायें कषाय सारे॥13॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥14॥

1. नित्य देवदर्शन, रात्रिभोजन का त्याग, बिना छने पानी का त्याग।

जो पाप हुये हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको ॥15॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ ॥16॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी ॥17॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===

सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)

(दोहा)

गर्भ जन्म तप ज्ञान वा, भजें मोक्ष कल्याण।
सो मेरा सुप्रभात हो, मंगलमय निर्वाण॥१॥

(चौपाई)

जिनके चरण देव जन छूते, दुर्द्धर कर्म जिन्हों के छूटे।
वृषभ अजित यों शंभव स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥2॥
छत्र चमर से शोभित नामी, सुमतिनाथ अभिनन्दन स्वामी।
पद्म प्रभु द्युति अरुण समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥3॥
नाथ सुपारस हरियल ज्योति, चन्द्रप्रभु ज्यों चाँदी मोती।
पुष्पदंत द्युति फटिक समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥4॥
तप्त स्वर्णसम शीतल नाथा, प्रभु श्रेयांस हरे विधि गाथा।
वासुपूज्य तनु पुष्प ललामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥5॥
विमलनाथ प्रभु दर्प निवारी, प्रभु अनंत सुख धीरज धारी।
कर्म रहित प्रभु धर्म सुधामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥6॥
स्वर्णिम शांतिनाथजी प्यारे, कुंथुनाथ करुणा शृंगारे।
अरहनाथ जिन तीरथ स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥7॥
मल्लिनाथ मद मोह निवारी, जय सुव्रत प्रभु शिव सुख धारी।
जय नमिनाथ शांति के स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥8॥
नेमिनाथ साँवलिया नेता, पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता।
वर्द्धमान जिनशासन स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥9॥

श्वेत लाल हरियल प्रभु पीले, शाश्वत सुख के धाम सुनीले।
रहे एक सौ सत्तर स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥10॥

(दोहा)

सुबह-सुबह नवदेव को, कर नमोस्तु धर ध्यान।
सहयोगी नक्षत्र हों, नश जाता अज्ञान॥
सो 'सुव्रत' सुप्रभात को, भजते प्रभु चौबीस।
कर्म हरें मंगल करें, अतः झुकायें शीश॥

दर्शन पाठ (दोहा)

दर्शन प्रभु अर्हंत का, दर्शन पाप नशाय।
दर्शन सीढ़ी स्वर्ग की, दर्शन मोक्ष दिलाय॥1॥
जिन-दर्शन मुनि वंदना, हरे पाप दुख पीर।
छिद्र सहित ज्यों अंजली, खोती अपना नीर॥2॥
पद्मरागमणि कांति सम, वीतराग मुख देख।
दर्शन से बहु जन्म के, नशते पाप अनेक॥3॥
दर्शन श्री जिन-सूर्य का, भव-तम करता नाश।
हृदय कमल विकसित करे, सारे अर्थ प्रकाश॥4॥
दर्शन श्री जिन-चंद्र का, धर्मामृत बरसाय।
हरे दाह भव जन्म का, सुख का सिन्धु बढ़ाय॥5॥
प्रतिपादक सब तत्त्व के, गुणसागर मय आठ।
नगन शान्त जिन रूप को, सदा झुकाऊँ माथ॥6॥
चिदानन्द परमातमा, एक जिनेन्द्री रूप।
दिग्दर्शक परमात्म के, नमूँ सिद्ध शिव रूप॥7॥
अन्य शरण मेरी नहीं, मात्र शरण जिन नाथ।
करुणा कर रक्षा करो, मेरी रक्षा आप॥8॥
त्रय जग में तुम सा नहीं, रक्षक त्राता ठौर।
वीतराग सा देव भी, हुआ न होगा और॥9॥
भव-भव में प्रतिदिन रहे, श्री जिन-भक्ति सदैव।
नित मुझमें जिन-भक्ति हो, हो जिन-भक्ति सदैव॥10॥
मुझे बिना जिन-धर्म के, चक्री की ना आश।
भले दुखी दारिद रहूँ, पर जिन-धर्म निवास॥11॥

जनम-जरा-मृतु रोग वा, जनम-जनम के पाप।
प्राप्त करोड़ों अघ नशें, जिन-दर्शन से आप ॥12 ॥

(ज्ञानोदय)

नाथ! आप के पद कमलों के, पावन दर्शन आज किये।
जिससे मेरे प्यासे नयना, सफल हुये गुण-सुधा पिये॥
तीन लोक के तिलक जिनेश्वर, आज मुझे लगता ऐसा।
मेरा खारा भवसागर अब, शेष बचा चुल्लू भर सा ॥13 ॥

===

दर्शन पाठ (चौपाई)

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन नाशक पाप मोह का।
दर्शन स्वर्ग सीढ़ियाँ पावन, दर्शन रहा मोक्ष का साधन ॥1 ॥
प्रभु जिनेन्द्र का दर्शन करके, साधु संत का वंदन करके।
नशे पुरानी पाप कहानी, झड़े अंजुली में ज्यों पानी ॥2 ॥
पद्मराग मणि जैसा सुंदर, वीतराग मुख आज देखकर।
जन्म-जन्म में पाप कमाते, दर्शन से वो सब नश जाते ॥3 ॥
जगत अंध को हरने वाला, हृदय कमल विकसाने वाला।
हर पदार्थ जो करे प्रकाशन, ऐसा जिन सूरज का दर्शन ॥4 ॥
धर्मामृत वरसाने वाला, जन्मदाह दुख हरने वाला।
सुखसागर का करता वर्धन, ऐसा जिन चंदा का दर्शन ॥5 ॥
जीव आदि सब तत्त्व दिखाये, सम्यक्त्वादि गुण प्रकटाये।
प्रशांत रूप दिगम्बर प्यारा, देवाधिदेव को नमन हमारा ॥6 ॥
चिदानंद जिन एक रूप हैं, जो परमात्म प्रकाश नित्य हैं।
सिद्धातम परमातम न्यारे, जिनको नमोऽस्तु रोज हमारे ॥7 ॥
अन्य शरण कोई ना मेरी, केवल आप शरण हो मेरी।
अतः बहाके करुणा झरना, मेरी रक्षा-रक्षा करना ॥8 ॥
तीन काल में तीन लोक में, वीतराग सा नहीं विश्व में।
तारक-तारक-तारक ना है, हुआ न होगा अब भी ना है ॥9 ॥
रहे सदा जिन भक्ति मुझमें, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें।
भव-भव में हो हो दिन-दिन में, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें ॥10 ॥
यदि जिनधर्म त्याग है करना, तो मुझको चक्री ना बनना।

भले दुखी दारिद्र रहूँ मैं, पर जिनधर्म न छोड़ सकूँ मैं ॥11 ॥
जन्म-जन्म में पाप किये जो, जन्म करोड़ों में अर्जित जो।
जन्म-मृत्यु वा रोग बुढ़ापा, जिनदर्शन से नश ही जाता ॥12 ॥
सफल हुए द्वय नयना मेरे, चरण कमल कर दर्शन तेरे।
नाथ! मुझे लगता अब ऐसा, भव जल शेष बचा चुल्लू सा ॥13 ॥

===

समाधि भावना

भगवन् सदैव मुझ पै, हो छत्र छाया तेरी।
चरणों में आपके ही, होवे समाधि मेरी॥
1. दर्शन तुम्हारा करके, सिर भी तुम्हें झुकाऊँ।
शास्त्रों का पान करके, तुम सा ही रूप पाऊँ॥
सत्संग करने मुझसे, होवे कभी न देरी। चरणों...
2. पर के न दोष बोलूँ, बोलूँ मधुर वचन मैं।
आगम का ले सहारा, अपना करूँ मनन मैं॥
जब तक न मोक्ष पाऊँ, रख लेना लाज मेरी। चरणों...
3. जब भी मरण हो मेरा, संन्यास से मरण हो।
मुनियों के साथ गुरु के, चरणों की बस शरण हो॥
जिनवाणी माँ की गोदी, छवि सामने हो तेरी। चरणों...
4. बचपन से आपके जो, चरणों की की हो सेवा।
यदि चाहते उसी का, बस फल यही हो देवा॥
णमोकार जपते-जपते, सल्लेखना हो मेरी। चरणों...
5. जब तक मुझे मिले ना, निर्वाण की नगरिया।
तब तक चरण तुम्हारे, मेरे मन में हो सँवरिया॥
मेरा हृदय न छोड़े, चरणों की छाँव तेरी। चरणों...
6. बस एक भक्ति तेरी, दुख संकटों को हरती।
बोधि समाधि दे के, सुख संपदा भी भरती॥
ओंकारमय बना दो, हर श्वाँस नाथ मेरी। चरणों...
7. जयवंत हो जिनशासन, हो जय-जिनेन्द्र नारा।
निर्ग्रंथ पंथ धारूँ, तजूँ पाप पंथ सारा॥
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, बरसे कृपा घनेरी। चरणों...

===

निर्वाण काण्ड

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोऽस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदिअनंत, भरत बाहुबलि कर्म हनंत।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥1॥
वासुपूज्य चंपापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥2॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥3॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥4॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।
साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥5॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥6॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागढ़ से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥7॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥8॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥9॥
नंग अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥10॥
रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥11॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥12॥

बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुंभकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥13॥
स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदीचेलना पूरव ह्रद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥14॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥15॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥16॥
वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥17॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुये कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥18॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥19॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गये गुणावा पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥20॥
मथुरा से श्री जंबूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥21॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कंवल पहुँचे शिवद्वार।
सुप्रतिष्ठित गोपाचल पार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥22॥
यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥23॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोऽस्तु बारम्बार॥24॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाये जग का उद्धार, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥25॥

(दोहा)

जो पाये निर्वाण सुख, सिद्ध अनंतानंत।
करके नमोऽस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवंत॥

॥ इति निर्वाणकाण्ड॥

निर्वाण काण्ड (प्राचीन)

(दोहा)

वीतराग वंदों सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय॥

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चम्पापुर नामी।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव भगति उर धार॥1॥
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥2॥
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भावसहित कर जोड़ि॥3॥
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्बु प्रद्युम्नकुमर द्वैभाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥4॥
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार॥5॥
पाण्डव तीन द्रविड राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पायान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥6॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल॥7॥
राम हणू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोडि निन्याणवै मुक्तिपयान, तुङ्गीगिरि वन्दौं धरि ध्यान॥8॥
नंग अनंगकुमार सुजान, पाँच कोडि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईश॥9॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवातट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास॥10॥
रेवानदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै-चक्री दश-कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भवपार॥11॥
बडवानी बडनयन सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भवभासर तर्ण॥12॥

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि वर शिखर मँझार।
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥13॥
फलहोड़ी वड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ ॥14॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार ॥15॥
अचलापुर की दिशा ईसान, तहाँ मेढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ॥16॥
वंशस्थल वन के ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ॥17॥
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुगपान ॥18॥
समवसरण श्रीपार्श्वजिनन्द, रेसिन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज ॥19॥
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल ॥20॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुण गाय ॥21॥
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥22॥

॥ इति निर्वाणकाण्ड ॥

देख सामने
प्रभु के दर्शन हैं
भूत को भूल

उन्हें जिनके
तन मन नग्न हैं
मेरा नमन

श्री भक्तामर-स्तोत्र

(वसन्ततिलका)

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि -प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम्।।1॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय - तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक - नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्- त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्
बालं विहाय जल -संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥3॥

वक्तुं गुणान्गुण - समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान् ,
कस्ते क्षमः सुर - गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - नक्र-चक्रम्,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥4॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्॥5॥

अल्प- श्रुतं - श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु - कलिका-निकरैक -हेतुः॥6॥

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोक - मलि -नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्॥7॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु- धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु ,
मुक्ता-फल - द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः ॥8॥

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥9॥

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण ! भूत-नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः,
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥10॥

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ?॥11॥

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि-भुवनैक - ललाम-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥12॥

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम् ।।13॥

सम्पूर्ण- मण्डल-शशाङ्क - कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास् - त्रि-भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रि-जगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥14॥

चित्रं - किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम् ।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ॥15॥

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय - मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥16॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्- जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा- प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥17॥

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारम्,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व - शशाङ्क-बिम्बम् ॥18॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमः -सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल - धरै-र्जल-भार-नम्रैः ॥19॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजो महा मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥20॥

मन्ये वरं हरि - हरा-दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥21॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥22॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य - गुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यःशिवःशिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥23॥

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥24॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय- शङ्करत्वात् ।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥25॥

तुभ्यं-नमस् - त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं-नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं - नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं-नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥26॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥27॥

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्- किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति ॥28॥

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता-वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र-रश्मेः ॥29॥

कुन्दावदात - चल - चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारि -धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥30॥

छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानु - कर-प्रतापम्।
मुक्ता - फल - प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् - त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥31॥

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक - शुभ-सङ्गम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म - राज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥32॥

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि-रुद्घा।
गन्धोद - बिन्दु- शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥33॥

शुम्भत्-प्रभा - वलय - भूरि - विभा-विभोस्ते,
लोक - त्रये - द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर - निरन्तर - भूरि -संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि-सोम-सौम्याम्॥34॥

स्वर्गापवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व - कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य- ध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव - परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥35॥

उन्निद्र - हेम - नव-पङ्कज - पुञ्ज-कान्ती,
पर्युल्-लसन्-नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥36॥

इत्थं यथा तव विभूति- रभूज् - जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् - प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतोग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥37॥

श्च्यो-तन् - मदाविल-विलोल - कपोल-मूल,
मत्त- भ्रमद्- भ्रमर - नाद - विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥38॥

भिन्नेभ-कुम्भ- गल-दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ता - फल- प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध - क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगाचल-संश्रितं ते॥ 39॥

कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्॥ 40॥

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥41॥

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम - इवाशु भिदामुपैति ॥42॥

कुन्ताग्र-भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय - पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज - वनाश्रयिणो लभन्ते॥43॥

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ-भय-दोल्वण - वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग -शिखर - स्थित - यान - पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति ॥44॥

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप गताश्-च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद-पङ्कज - रजो-मृत - दिग्ध - देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्यरूपाः॥ 45॥

आपाद - कण्ठमुरु - शृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढं-बृहन्-निगड - कोटि निघृष्ट - जङ्घाः।
त्वन्-नाम - मन्त्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत - बन्ध-भया भवन्ति॥46॥

मत्त-द्विपेन्द्र - मृग - राज - दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर - बन्ध -नोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुप - याति भयं-भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमान-धीते॥ 47॥

स्तोत्र - स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण - विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता- मजस्रम्,
तं मानतुङ्ग-मवशा-समुपैति लक्ष्मीः॥ 48॥

===

भक्तामर भाषा

(चौपाई)

भक्तामर की मणि चमकायें, पाप अंध विस्तार नशायें।
भव जल पतितों के अवलंबन, उन जिन पद को सम्यक् वंदन ॥1॥
बुद्धि कला जिन श्रुत से पाके, जगत मनोहर गीत रचा के।
सुरपति कहें छंद आदि को, मैं ध्याऊँगा उन आदि को ॥2॥
जिन चरणा सुर पूजित मानें, मैं उद्यत उनके गुण गाने।
ज्यों लज्जा बिन शिशु की हठता, कौन चंद्र जल बिम्ब पकड़ता ॥3॥
गुण समूह हैं चंदा जैसे, सुरपति उन्हें कहेगा कैसे।
ज्यों सागर तूफान उठेगा, कौन बाहु से वो तैरेगा ॥4॥
भक्ति भाव वश दशा हमारी, भक्ति शक्ति बिन करूँ तुम्हारी।
जैसे हिरणी बिना विचारे, शिशु रक्षा को शेर पछाड़े ॥5॥
ज्ञानी हँसी उड़ायें मेरी, फिर भी भक्ति करूँ मैं तेरी।
ज्यों वसंत में बौर देखकर, कोयल बोले मौन खोलकर ॥6॥
रात अँधेरा जग को ढाँके, देख सूर्य किरणों को काँपे।
वैसे भव-भव पाप हुए जो, तव संस्तव से नाश हुए वो ॥7॥
अल्प बुद्धि से मैं शुरु कर लूँ, छंदबद्ध प्रभु भक्ति कर लूँ।
प्रभु प्रभाव से जग हर लेगा, सचमुच मोती सा चमकेगा ॥8॥
सूर्य दूर पर किरणें पाते, कमल सरोवर के खिल जाते।
प्रभु संस्तव उसका क्या कहना, केवल कथा हरे भव भ्रमणा ॥9॥
भूतनाथ! भूषण! ना विस्मय, पूजक पूज्य बना तुम सम जय।
आखिर उससे कौन प्रयोजन, आश्रित को जो ना दे निज धन ॥10॥
क्षीर सिंधु का पी जल मीठा, कौन क्षार का पियेगा तीखा।
अपलक दर्शन योग्य तुम्हीं हो, तुमको देख नजर न कहीं हो ॥11॥
सुंदर शांत राग रुचि द्वारा, जिन अणुओं ने तन शृंगारा।
भू पर वे अणु उतने पूजे, अतः आप सम कोई न दूजे ॥12॥
कहाँ प्रभु मुख जगत लुभाये, जीते सब जग की उपमाएँ।
और कहाँ वह दागी चंदा, दिन में पड़ता फीका मंदा ॥13॥

पूर्ण चन्द्र सम गुण गण तेरे, त्रय जग लाघें सब में डेरे।
जो पाएँ प्रभु चरण शरण को, रोके कौन उन्हें विचरण को ॥14॥
प्रलय काल से पर्वत काँपे, पर क्या सुमेरु हिले जरा से।
यौं सुरियों के नाच देख के, अचरज क्या प्रभु कभी न डिगते ॥15॥
धुआँ बाति बिन तेल उजाले, त्रय जग रोशन करने वाले।
जिसे आँधियां बुझा न पाएँ, आप अलौकिक दीप कहाएँ ॥16॥
अस्त न होता राहु न डसता, जिन प्रभाव को मेघ न ढकता।
युगपद त्रय जग प्रभु दिखलाएँ, महिमा अधिक सूर्य से पाएँ ॥17॥
राहु डसे ना दिव्य प्रकाशी, मेघ ढके ना मोह विनाशी।
प्रभु का मुख उज्ज्वल चंदा सा, जगतप्रकाशी आनंदा सा ॥18॥
काम हुआ जब फसलों का है, तो क्या काम बादलों का है।
अंध चंद्र मुख प्रभु यों नाशे, तो क्या सूरज क्या चंदा से ॥19॥
चमक रही मणियों में जैसे, काँच किरण में क्या हो वैसे।
ऐसे ज्ञान आप में शोभे, पर देवों में क्या वह होवे ॥20॥
पर दर्शन मैं श्रेष्ठ बताऊँ, पर संतोष आप में पाऊँ।
दर्शन से क्या-क्या मैं पाऊँ, पर भव में पर में न लुभाऊँ ॥22॥
परम पुरुष मानें मुनि नेता, पर तुम रवि सम तिमिर विजेता।
मृत्युंजय हों तुमको पाकर, मोक्ष-मोक्ष पथ तुमसे ना पर ॥23॥
अव्यय अचिंत्य असंख्य विभु हो, ब्रह्मा अनंत अनंग केतु हो।
एकानेक विदित योगीश्वर, तुम्हें कहें मुनि शुचि ज्ञानीश्वर ॥24॥
देव पूज्य हो बुद्ध स्वरूपी, जग सुखदाता शंकर रूपी।
शिवमग दाता तुम्ही विधाता, तुम पुरुषोत्तम हो विख्याता ॥25॥
जग दुख हरता तुम्हें नमोऽस्तु, जग के भूषण तुम्हें नमोऽस्तु।
जग परमेश्वर तुम्हें नमोऽस्तु, भव जल शोषक तुम्हें नमोऽस्तु ॥26॥
जब गुणगण ने साथ न पाया, क्या विस्मय तुमको अपनाया।
किन्तु दोष जो पर में टिकते, प्रभु में सपने में ना दिखते ॥27॥
ऊँची किरणें अंध विनाशी, बादल दल के निकट निवासी।
सुंदर प्रभु तन सूरज जैसा, अशोक तरुतल शोभित ऐसा ॥28॥

सिंहासन मणि किरणों जैसा, उस पर प्रभुतन सोने जैसा।
यों लगता ज्यों उदयाचल से, सूर्य उगा हो पूर्ण प्रभा ले ॥29॥
कुंदपुष्प सम धवल चँवर हैं, मध्य सुनहरे प्रभु सुंदर हैं।
यों लगता ज्यों सुरगिरि तट पर, चंदा सम झरने हों झर-झर ॥30॥
सूर्य ताप हर ऊँचे होवें, मणियों की लड़ियों मय शोभें।
तीन छत्र चंदा सम भाएँ, त्रय जग के तुम नाथ बताएँ ॥31॥
उच्च स्वरोंमय हर दिश गूँजें, शुभ संगम को त्रय जग पूजें।
दुंदुभि बाजा यथा आपका, धर्मराज की विजय पताका ॥32॥
पारिजात सन्तानक आदि, दिव्य पुष्प जल-कण इत्याादि।
मंद दिव्य पुष्पों की वर्षा, लगे दिव्य वचनामृत वरसा ॥33॥
उदित हो रहे सूर्य बहुत से, उज्ज्वल शीतल चंदा जैसे।
त्रय जग की सुंदरता जेता, प्रभु भामण्डल रात्रि विजेता ॥34॥
स्वर्ग मोक्षपथ की दिग्दर्शन, धर्म तत्त्व कहने में सक्षम।
विशद अर्थ हर भाषा रूपी, दिव्यध्वनि ओंकार स्वरूपी ॥35॥
नए सुनहरे कमलों जैसे, नख की किरणें चमकें ऐसे।
चरण कमल प्रभु जहाँ जमायें, वहीं देवगण कमल रचायें ॥36॥
इस विधि वैभव दिव्य ध्वनि का, हुआ आपका नहीं किसी का।
तम हर सूरज कांति जैसी, तारा गण की ज्योति न वैसी ॥37॥
मद् मैले गालों से झरता, क्रोध भ्रमर गूँजों से बढ़ता।
यों ऐरावत गज हो आगे, तो प्रभु शरणागत ना भागे ॥38॥
जो फाड़े गज गंडस्थल को, गजमुक्ता से भूषित थल को।
ऐसा सिंह भी निज पंजों से, बोल सके ना जिन भक्तों से ॥39॥
अंगारों सी आग धधकती, प्रलयकाल से खूब भभकती।
ऐसी आग अगर लग जाये, प्रभु कीर्तन जल शीघ्र बुझाये ॥40॥
कोयल के कंठों सा काला, क्रुद्ध नयन उठते फण वाला।
ऐसा नाग अभय हो लाँघें, प्रभु की मणी हृदय जो राखें ॥41॥
जहाँ अश्व गज की चिंघाड़ें, जहाँ शत्रु रण में ललकारें।
प्रभु कीर्तन से यूँ रिपु भागें, अंध सूर्य किरणें ज्यों नाशें ॥42॥

फाड़ गये गज योद्धा भाले, रक्त मेघ में दौड़ने वाले।
ऐसे रण में शत्रु हरायें, जो प्रभु पद पंकज वन ध्यायें ।।43 ।।
मगरमच्छ मय वड़वानल हो, फिर पाठीन तरंगित जल हो।
यदि जलयान वहीं फँस जायें, तो प्रभु सुमरण कर तट पायें ।।44 ।।
रोग जलोदर कमर झुकाये, जो जीने की आश गँवाये।
प्रभु चरणामृत पा ऐसे नर, कामदेव सम होवें सुंदर ।।45 ।।
बड़ी साँकलों से बाँधा हो, ऐड़ी चोटी तक जकड़ा हो।
पैर छिलें उनकी रगड़न से, शीघ्र टलें प्रभु नाम मंत्र से ।।46 ।।
ये संस्तव मतिमान पढ़े जो, शेर युद्ध गज भय न उसे हो।
सिन्धु महोदर बंधन के भय, सर्प दवानल वो कर लें जय ।।47 ।।
मैंने बुनी भक्ति भावों से, ये जो माला गुणपुष्पों से।
इसको जो नित कंठ धरेगा, मानतुंग सम लक्ष्मी वरेगा ।।48 ।।

(दोहा)

संस्कृत भक्तामर रचें, 'मानतुंग' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाईयाँ, आदिनाथ प्रभु ध्याएँ॥

===

जय हो! जय हो! **वृषभनाथ** की,
हुये प्रथम जो तीर्थंकर।
सागर तक वसुधा को तजकर,
बने स्वयंभू क्षेमंकर॥
परम दयालु निर्दय बनकर,
किये भस्म मोहादिक को।
निकट आपके आने हम भी,
करें नमोस्तु चरणादिक को॥

पार्श्वनाथ चालीसा (प्राचीन)

(दोहा)

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मन मन्दिर में धार॥

(चौपाई)

पारसनाथ जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रत के धारी।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम ही सब देवन के देवा ॥1॥
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा माँ की आँखों के तारे॥2॥
काशीजी के स्वामी कहाये, सारी परजा मौज उड़ाये।
इक दिन सब मित्रों को लेकर, सैर करन को वन में पहुँचे॥3॥
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी।
एक तपस्वी देख वहाँ पर, उससे बोले वचन सुनाकर॥4॥
तपसी! तुम क्यों पाप कमाते, इस लक्कड़ में जीव जलाते।
तपसी तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़ को चीर गिराया॥5॥
निकले नाग-नागिनी कारे, मरने के थे निकट बिचारे।
रहम प्रभु के दिल में आया, तभी मंत्र नवकार सुनाया ॥6॥
मरकर वो पाताल सिधाये, पद्मावती धरणेन्द्र कहाये।
तपसी मरकर देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थों में गाया॥7॥
एक समय में श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी।
तप करते थे ध्यान लगाये, इक दिन कमठ वहाँ पर आये॥8॥
फौरन प्रभु को पहिचाना, बदला लेना दिल में ठाना।
बहुत अधिक बारिश बरसाई, बादल गरजे बिजली गिराई॥9॥
बहुत अधिक पत्थर बरसाये, स्वामी तन को नहीं हिलाये।
पद्मावती धरणेन्द्र भी आये, प्रभु की सेवा में चित लाये॥10॥
पद्मावती ने फन फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने फन फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया।

कर्मनाश प्रभु ज्ञान उपाया, समवसरण देवेन्द्र रचाया ॥11॥
यही जगह अहिच्छत्र कहाये, पात्र केशरी जहाँ पर आये।
वह पण्डित ब्राह्मण विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना ॥12॥
शिष्य पाँच सौ संग में आये, सब कट्टर ब्राह्मण कहलाये।
पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सबने जैन धरम अपनाया ॥13॥
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिनमन्दिर बनवाये ॥14॥
प्रतिमा पर पालिश करवाया, फौरन इक मिस्त्री बुलवाया।
वह मिस्त्री माँस खाता था, जिससे पालिश गिर जाता था ॥15॥
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारस दर्शन व्रत दिलवाया।
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना ॥16॥
गदर सतावन का किस्सा है, इक माली को यो लिक्खा है।
माली इक प्रतिमा को लेकर, झट छुप गया कुए के अन्दर ॥17॥
उस पानी का अतिशय भारी, दूर होये सारी बीमारी।
जो अहिच्छत्र हृदय से ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे ॥18॥
पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, पापों की इकदम घटती हो।
है तहसील आँवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी ॥19॥
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जाने सब नारी-नर।
चालीसे को 'चन्द्र' बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये ॥20॥

(सोरठा)

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आय के॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं संतान, नाम वंश जग में चले॥

===

श्रीपार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाथ शीशं।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथैं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं ॥1 ॥

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै, महा आगतैं नागतै तू बचावै।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै ॥2 ॥

दुख दुःखहर्त्ता सुखी सुखकर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता।
हरे यक्ष-राक्षस भूतं-पिशाचं, विषं डांकिनी विघ्न के भय अवाचं ॥3 ॥

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥4 ॥

महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंजतैं तू उबारै।
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभशैलेश को वज्र भारा ॥5 ॥

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महाकर्म कांतार को दौ प्रधानं।
किये नाग-नागिन अधोलोक स्वामी, हरयोमान तू दैत्य को हो अकामी ॥6 ॥

तू ही कल्पवृक्षं तू ही कामधेनं, तू ही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।
पशु नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्गतैं मुक्ति में तू बसावै ॥7 ॥

करै लोह को हेमपाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करै सेव ताकी करें देव सेवा, सुने वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥8 ॥

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे ॥9 ॥

(दोहा)

गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीत निहारिकैं, कीजे आप समान॥

===

महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥1॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितम्,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥2॥

नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भा-जाल-जटिलम्,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥3॥

यदर्चा - भावेन प्रमुदित - मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥4॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत-गतिर्-
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥5॥

यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥6॥

अनिर्वारोद्रेकस् - त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥7॥

महामोहातङ्क प्रशमन - पराकस्मिकभिषग्,

निरापेक्षो बन्धुर्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥8॥
महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥ 9॥

महावीराष्टक स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद)

(ज्ञानोदय)

जिनके ज्ञान रूप दर्पण में, ध्रौव्य नाश उत्पादमयी।
युगपद् प्रतिबिम्बित शोभित हों, जड़ चेतन के अर्थ सभी॥
जग साक्षी जो सूरज जैसे, शिवमग प्रतिपादक ज्ञानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥1॥
बिन लाली अनिमेष नयन हैं, कमल युगल सम जो रहते।
भीरत बाहर क्रोध नहीं है, प्रकट रूप से यह कहते॥
जिनकी मूरत परम शान्त है, अति निर्मल जग कल्याणी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥2॥
जिनके दोनों पद कमलों में, देवों की श्रेणी झुकतीं।
उनके मुकुटों की मणियों की, कांति जिन्हें शोभित करतीं॥
जग जन के भव ताप शांति को, जिनका बस सुमरण पानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥3॥
जिनकी पूजा के भावों से, मेढ़क प्रमुदित मन वाला।
इस जग में क्षणभर में देखो, बना देव सुख गुण वाला॥
तो तव भक्त मोक्ष सुख पाते, क्या इसमें अचरज स्वामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥4॥
चमकित स्वर्ण कांति सम तन बिन, एकानेक आत्म ज्ञानी।
सिद्धारथ राजा के सुत जो, जन्म रहित हैं श्रीमानी॥
वीतराग भव राग बिना जो, अद्भुत गति है शिवधामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥5॥
जिनकी शुचि वाणी की गंगा, विपुल ज्ञान के जल द्वारा।
जग जीवों को नहलाती है, बहु नय की लहरों द्वारा॥
ज्ञानी हंसों से परिचित यों, जाने जिनकी जिनवाणी।

मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी ॥6॥
जिनने कुमार काल दशा में, चमकित शान्त सदा सुख के।
पूज्य राज्य शिवपद पाने को, अपने आतम के बल से॥
दुर्जय पापी त्रिभुवन जेता, काम-सुभट जीता मानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी ॥7॥
महामोह के रोग शमन को, आकस्मिक जो वैद्य रहे।
बिना उपेक्षा के बन्धू जो, मंगल महिमा सहित रहे॥
भव दुख से भयभीत जनों को, उत्तम गुण शरणादानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी ॥8॥

(दोहा)

भागचंद अष्टक रचे, महावीर का स्तोत्र।
पढ़े सुने जो भक्ति से, पाय परम गति मोक्ष॥९॥
'सुव्रत' रचकर पद्य में, महावीर गुण गाय।
महावीर जल्दी बनूँ, सर्वोदय मन लाय॥१०॥

॥ इति शुभम्॥

महावीराष्टक स्तोत्र (भावानुवाद)

(चौपाई)

लोकालोक झलकते ऐसे, जिनचेतन में दर्पण जैसे।
सूरज सम जो पथ दें ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥1॥
अपलक लाल न जिनके नयना, क्रोध रहित भक्तों के गहना।
मूरत परम शांत निज-ध्यानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥2॥
जिनको पूजें सुर मणिमाला, जिनकी याद हरे भव-ज्वाला।
जिनका सुमरण शीतल पानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥3॥
मेढ़क देव बना पूजन कर, तो जिन भक्त मोक्ष पायें फिर।
इसमें क्या आश्चर्य कहानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥4॥
तन है फिर भी ज्ञान सहित हैं, जन्म रहित सिद्धारथ सुत हैं।
एक अनेक धनी विज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥5॥
नय तरंग गंगा जिनवाणी, हमें ज्ञान जल दें कल्याणी।
दिखें आज भी हंसा ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥6॥

महा मोक्ष पाने बचपन से, दुर्जय काम हरे निज बल से।
बने जितेन्द्री अंतर्यामी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥7॥
मोह रोग हर वैद्य तुम्हीं हो, मंगल कर जगबंधु तुम्हीं हो।
साधु संत के शरणा दानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥8॥

(दोहा)

संस्कृत में अष्टक रचे, 'भागचंद' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाइयाँ, महावीर बन जाएँ॥

===

गोम्मटेश अष्टक (भावानुवाद)

(चौपाई)

नीलकमल दल जैसे नयना, चंदा जैसा मुखड़ा है ना।
नासा लख चंपा हुई पानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥1॥
नभ जल जैसे गाल चमकते, कंधों तक तो कान लटकते।
भुजा दंड गज सूँड समानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥2॥
कंठ शंख जैसा अनुपम है, वक्ष विशाल हिमालय सम है।
कटि प्रदेश अचल अभिरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥3॥
विंध्यगिरी पर चमक रहे जो, सब चैत्यों के प्रमुख रहे जो।
जग को सुख दें चंदा स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥4॥
जिनके तन पर चढ़ी लतायें, जिन्हें कल्पतरु भव्य बतायें।
जिन पद में सुर भी प्रणमामि, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥5॥
जिन्हें न भय जो शुद्ध दिगम्बर, जिनके मन को रुचे न अम्बर।
सर्प आदि से कपित न स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥6॥
आश रहित समदर्शनधारी, सुख नहिं चाहें दोष निवारी।
भरत भ्रात में शल्य विरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥7॥
तजे उपाधी समता पाये, वित्त धाम मद मोह नशाये।
किये वर्ष भर अनशन स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि ॥8॥

(दोहा)

प्राकृत में अष्टक रचे, 'नेमिचन्द्र' गुण गाए।
बाहुबली के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाए॥

===

आरती–पंचपरमेष्ठी

जिनवर की बोलो जय–जय रे, आरतिया उतारो।
हाँ–हाँ रे...आरयिा उतारो॥

1. पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जहाजा।
2. दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।
3. तीसरी आरती सूरि मुनिन्दा, जनम–मरण दुख दूर करिन्दा।
4. चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
5. पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।

===

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं–2,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥

सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥1॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥2॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥3॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥4॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख–ती।
राजा श्रेयांस–सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥5॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥6॥

===

THE NINE FINE GOD WORSHIP

Foundation (Couplet)

Jain fan find to, nine fine God
Now quick start we, worshipping method.

O! Nine fine god we want to do your worship so we respectfully invite you to please come here... come here...! please sit here... sit here...! please stay in our heart. (Flower offering)

(Quatrain)

Water washes outer body,
inter we have soul some dirty.
But we want the soul divine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our birth-death cycle so we worship you by pure water .

Burning fire everywhere,
nothing peacefull life here.
But we want peacefull time,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our whole anger cycle so we worship you by pure sandal.

Competition is very lengthy,
how to face it faith not healthy.
Please stop this emotional crime,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our this world cycle so we worship you by pure unbroken rices.

Everybody servant of body,
nobody become boss of body.
But we don't want this world wine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our celibacy character for life so we worship you by pure flowers.

Universal truth is diet,

how to defeat this hunger fight.
But we don't want food poison,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our hunger disease so we worship you by pure food items.

Dark heart but lighted body,
this is way of sorrow melody.
Please give us your spirit shine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our ignorance cycle so we worship you by pure lamp.

Karma king is boss of gambler,
who comes in this world sin counsler.
But we want your victory sign,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our karma cycle so we worship you by pure incense (dhoop).

Bad work give outcome wrong,
best work give outcome long.
Please give us your platinum coin,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our bliss so we worship you by pure fruits.

Good-good things of pure collection,
we want admission your section
Please give me your entry line,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our priceless status so we worship you by mix things .

BAY OF THE NINE FINE GOD

(couplet)

God has full purity, infinite virtues
Faithfully eccept it , faithless confuse

(lion move)

1. The first god lord Shri ARIHANTA half pure,
Donate all fans path pure and sure.
2. Second god lord Shri SIDDHA got soul,
They distribute gold goal left world role.
3. AACHARYA god lord great saints of jains,
They give the vows who closed our sins rains.
4. Dispatch UPADHYAY god light religions,
We take that long life light decision.
5. The fifth god lord JAIN'S MONKS saints head,
To get pure soul the pickup skyclad.
6. Jainism is the bliss way called JIN DHARMA,
Jainism principles written volume JIN AAGAMA.
7. Statues of the jain god called JIN CHAITYA,
The temple of the jain gods called JINALAYA.
8. We pray to nine god gain your devotees,
Give the excellence path right gravities.
9. So we want come to your happy- happy home,
Give the happy - happiness 'SUVRAT' wants 'om'.

(couplet)

Nine fine god give, right - right knowledge.
Every - every worshipper, dedicated age.

O! Nine fine god we praise bay of worship you to be dedicated complite mix things . (Flower offring)

===